*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

स्वर्णिमा

हिंदी पाठ्य-पुस्तक

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

7

YBPL

स्वर्णिमा कक्षा-7

अध्याय-1

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

अभ्यास: (पेज 6)

मौखिक–

(क) 1. लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
2. नन्ही चींटी दाना लेकर दीवारों पर चढ़ती है।
3. मन का विश्वास हमें साहस से भर देता है।
4. यहाँ चींटी की तुलना कोशिश करते रहने वाले लोगों से की गई है। जो लोग निरंतर प्रयास करते रहते हैं, उनकी मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।
5. मोती गहरे पानी में मिलते हैं।

लिखित–

1. जो व्यक्ति लगातार जीतने का प्रयास करते रहते हैं, वे कभी न कभी सफल ज़रूर होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की कभी हार नहीं होती। निरंतर प्रयास करते रहने वाले व्यक्ति की कभी हार नहीं होती।
2. चींटी को चढ़कर गिरना और गिरकर चढ़ना इसलिए नहीं अख़रता है क्योंकि उसे विश्वास है कि वह एक न एक दिन सफल ज़रूर होगी। वह निरंतर दीवार पर चढ़ने का प्रयास करती रहती है तथा अंत में चढ़कर ही दम लेती है।
3. गोताखोर का विश्वास तब दोगुना हो जाता है, जब वह बार-बार गहरे पानी में जाकर मोती तलाशता है पर खाली हाथ वापस आता है। गोताखोर को पता है कि मोती आसानी से नहीं मिलेगा इसलिए वह हर बार दोगुना विश्वास के साथ डुबकी लगाता है व अंत में सफलता भी पाता है।
4. बिना कोई कार्य किए जय-जयकार नहीं होती है। हम जब कोई महत्त्वपूर्ण कार्य, जो अन्य व्यक्ति असफल होने पर करना छोड़ देते हैं, उस कार्य को बार-बार असफल होने के बाद भी पूरा करके छोड़ते हैं। तभी हमारी जय-जयकार होती है।
5. अगर हम असफलता की चुनौती को स्वीकार नहीं करेंगे तो जग में हमारी जय-जयकार असंभव है। असफलता को स्वीकार कर जो कमी रह गई है, उस कमी को दूर कर ही हम सफल हो पाएँगे तथा अपनी जय-जयकार सुन पाएँगे।

(ख) 1. (अ) सोहनलाल द्विवेदी 2. (अ) विश्वास 3. (स) स्वीकार
4. (अ) जय-जयकार 5. (स) हार

(ग) 1. नौका 2. फिसलती 3. मोती 4. विश्वास 5. नींद, चैन

(घ) 1. असफलता एक चुनौती है, – स्वीकार करो।
2. क्या कमी रह गई है, – देखो और सुधार करो।
3. मन का विश्वास, – रगों में साहस भरता है।
4. डुबकियाँ सिंधु में – गोताखोर लगाता है।
5. मिलते न सहज ही, – मोती गहरे पानी में।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. कोशिश – क्+ओ+श्+इ+श्+अ
2. दीवार – द्+ई+व्+आ+र्+अ
3. मेहनत – म्+ए+ह्+अ+न्+अ+त्+अ
4. बेकार – ब्+ए+क्+आ+र्+अ
5. गोताखोर – ग्+ओ+त्+आ+ख्+ओ+र्+अ

(ख) 1. तैराक 2. नाविक 3. कामचोर 4. विश्वसनीय 5. चित्रकार

(ग) 1. मत– वोट, नहीं 2. हार– पराजय, माला 3. पानी– जल, चमक, लज्जा
4. कर– टैक्स, हाथ, करना 5. वर्ण– अक्षर, जाति

(घ) 1. कोशिश– हमें निरंतर कोशिश करते रहना चाहिए।
2. विश्वास– पिताजी को तुम पर बहुत विश्वास है।
3. गोताखोर– वह एक कुशल गोताखोर है।
4. असफलता– अपनी असफलता को सफलता में बदलने के लिए निरंतर कोशिश करते रहो।
5. मेहनत– मेहनत से कभी जी न चुराओ।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) कविता– नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को
संभलो कि सुयोग न जय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को
जब प्राप्त तुम्हें सब तत्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्व कहाँ
तुम स्वत्तव सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो, न निराश करो मन को
निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोत्तैर गुंजित गान रहे
सब जाए अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को
प्रभु ने तुमको दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को
किस गौरव वे तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जान हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन के

नर हो, न निराश करो मन को
करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो।

* अध्यापिका विद्यार्थियों को यह पूरी कविता न लिखवाकर केवल उन दो छंदों को लिखने के लिए कहें जो विद्यार्थियों को पसंद आए हों।

(ख) समुद्र से मिलने वाली चीज़ें

1. नमक 2. मछलियाँ 3. मोती 4. शंख 5. तेल
6. समुद्री शैवाल 7. सिवार 8. कौड़ी 9. पत्थर 10. सीपी
11. समुद्री मूँगा

* विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार किन्हीं छह वस्तुओं के चित्र चिपकाएँगे तथा उन के नाम लिखेंगे (अपनी पुस्तक में)।

अध्याय-2

परीक्षा

अभ्यास: (पेज 14)

मौखिक–

(क) 1. अरब देश का सुल्तान चतुर, बुद्धिमान और न्यायप्रिय था।

2. सुल्तान की आदत थी कि वह बुद्धिमान लोगों का सम्मान करता था। जब उसे पता चला कि काज़ी कठिन समस्या का समाधान आसानी से कर देता है तो काज़ी की ख्याति सुनकर सुल्तान ने उसकी परीक्षा लेने का निश्चय किया।
3. सुल्तान ने चलते समय अपनी राजसी पोशाक उतार दी तथा साधारण आदमी जैसे कपड़े इसलिए पहने ताकि सुल्तान को कोई पहचान न पाए और वह काज़ी की परीक्षा आसानी से ले पाए।

लिखित–

1. सुल्तान को रास्ते में एक लँगड़ा आदमी मिला था।
2. 'सुल्तान और लँगड़े व्यक्ति में घोड़े का स्वामी कौन है?' इस बात को लेकर झगड़ा हुआ था।
3. तेली और धोबी के बीच पैसे के लेन देन को लेकर झगड़ा हो रहा था।
4. काज़ी ने तेली और धोबी के मुकदमे का न्याय इस प्रकार से किया उन्होंने तेली और धोबी द्वारा दिए गए पैसों को पानी के एक बरतन में डाला। सुबह तक उन पैसों पर तेल का एक भी निशान नहीं आया। इससे पता चलता है कि पैसे धोबी के हैं। अगर तेली के होते तो उन पर तेल का निशान ज़रूर आता।
5. काज़ी ने सुल्तान और लँगड़े आदमी में से घोड़ा सुल्तान को दिया क्योंकि जब सुल्तान घोड़े से मिलने घुड़साल में गया तो घोड़ा हिनहिनाने लगा पर जब लँगड़ा आदमी घोड़े के पास गया तो घोड़े ने उसे दुलत्ती मार दी। जानवर अपने मालिक को पहचानने में गलती नहीं करते। इस प्रकार घोड़े के स्वामी का पता लगाया गया।

(ख) 1. (अ) बेईमान 2. (अ) राजा 3. (ब) काज़ी 4. (स) भविष्यत् काल 5. (ब) नाई

(ग) 1. मदद– सहायता 2. मेहरबानी– कृपालुता 3. हुक्म– आदेश 4. सलाम– नमस्कार
5. खुद– स्वयं 6. सिर्फ़– केवल 7. फ़ैसला– निर्णय 8. निशान– चिह्न

(घ) 1. चातुर्य ✓ 2. मेहरबानी ✓ 3. परिचय ✓ 4. प्रधानमंत्री ✓ 5. न्यायप्रिय ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. घोड़ा – अश्व, तुरंग घोटक 2. दूध – क्षीर, दुग्ध, गोरस
3. चतुर – चालाक, होशियार 4. पानी – जल, नीर, वारि, अंबु

(ख) 1. मैंने 2. तुमसे 3. वह 4. वह 5. मुझे

(ग) 1. परिचय – मैंने अपनी माँ का परिचय अपने मित्रों से करवाया।
2. आभारी – आपने मेरी फीस माफ़ कर दी। मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।
3. निश्चय – विवेक छुट्टियों में मसूरी घूमने का निश्चय कर चुका है।
4. प्रभावित – भगत सिंह के व्यक्तित्व ने बहुत से युवाओं को प्रभावित किया है।
5. अवश्य – तुम आज फिर देरी से आए हो, अवश्य ही तुम देर से उठे होंगे।
* विद्यार्थियों के विचार भिन्न हो सकते हैं।

(घ) 1. बुनकर 2. धोबी 3. लोहार 4. कुम्हार 5. बढ़ई

(ङ) 1. मेरी 2. मैंने, आप 3. आप, मुझे, मैं, आपका 4. तुम्हारा, मेरा

रचनात्मक ज्ञान–

(क) * इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं देंगे। वे पुस्तकालय में से विक्रमादित्य से संबंधित कोई एक कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाएँगे।

(ख) लोकोक्तियाँ

1. झूठ के पाँव नहीं होते– झूठ बोलने वाला एक बात पर नहीं टिकता।
उसकी बातों से साफ़ लग रहा था कि वह झूठ बोल रहा था क्योंकि उसके शब्द बार-बार परिवर्तित हो रहे थे तभी कहते हैं कि झूठ के पाँव नहीं होते।
2. दूध का दूध पानी का पानी– सही न्याय करना
अदालत में निर्दोष को बचाकर वकील ने दूध का दूध, पानी का पानी कर दिया।
3. आम के आम गुठलियों के दाम– दोहरा लाभ होना
मेरी माताजी ने पुरानी घड़ी देकर नई घड़ी ले ली। इसे कहते हैं, आम के आम गुठलियों के दाम।
4. जैसी करनी वैसी भरनी– कार्य के हिसाब से फल मिलना
रमेश परीक्षा के समय टी.वी. देखता रहा इसलिए परीक्षा में फेल हो गया। इसे कहते हैं, जैसी करनी वैसी भरनी।

मुहावरे

1. नाक में दम करना– परेशान करना
छुट्टियों में बच्चे शोर मचाकर मम्मी की नाक में दम कर देते हैं।
2. अंधे की लाठी– एकमात्र सहारा
श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अंधे की लाठी के समान थे।
3. आँखों में धूल झोंकना– धोखा देना
चोर सिपाही की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।
4. चेहरा खिलना– प्रसन्न होना
खिलौना देखकर मेरा चेहरा खिल गया।

* विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार कुछ अन्य मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी लिख सकते हैं।

अध्याय-3

शिष्टाचार

अभ्यास: (पेज 20)

मौखिक–

(क) 1. विनम्रतापूर्ण आचरण और व्यवहार शिष्टाचार है।
दूसरों के साथ सभ्यतापूर्ण ढंग से पेश आना, सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना और सबका उचित आदर-सत्कार करना शिष्टाचार है।

2. शिष्टाचार मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास करता है। यह जीवन में सुख, शांति और सौंदर्य बिखेरता है। शिष्टाचार मनुष्य को भद्र और कुलीन बनाता है
3. विनम्रता शिष्टाचार का अनिवार्य गुण है। वाणी और व्यवहार की विनम्रता शिष्ट आचरण की पहचान है।
4. वाणी और व्यवहार की विनम्रता शिष्ट आचरण की पहली पहचान है।

लिखित–

1. अगर हम दूसरों के साथ सभ्यतापूर्ण ढंग से पेश आते हैं, सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हैं और दूसरों का उचित आदर-सत्कार करते हैं तो इसका अर्थ है कि हमें शिष्टाचार का ज्ञान है।
2. वेदव्यास जी के अनुसार शिष्ट आचरण कल्याण करने वाला, आयु बढ़ाने वाला एवं कीर्ति प्रशस्त करने वाला होता है। यह बुरे लक्षणों को भी नष्ट करता है। यह एक सर्वश्रेष्ठ ज्ञान के समान है तथा इसकी मदद से हमारी सारी कामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं।
3. उदार रहना, दया दिखाना और समानता का निर्वाह शिष्ट व्यवहार की कसौटी है।
4. जब दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे हों तो बीच में बोलना अशिष्टता है।
   – बस स्टॉप या रेल में चढ़ते समय लाइन तोड़ना अशिष्टता है।
   – भीड़ में धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ना अशिष्टता है।
   – भोजन करते समय मुँह से 'चप-चप' की आवाज़ करना अशिष्टता है।
5. जब हम अनुशासन में रहकर शिष्टता दिखाते हैं, उसे अनुशासनात्मक शिष्टाच. ार कहते हैं जैसे मंदिर, गुरुद्वारे, मठ आदि में जूता उतारकर जाना अनुशासनात्मक शिष्टा. चार है। राष्ट्र ध्वज के चढ़ते-उतरते और राष्ट्रगान के समय स्तब्ध खड़े रहना अनुशासित व शिष्ट आचरण है।

(ख) 1. (स) दोनों ✓ 2. (अ) वेदव्यास ✓ 3. (स) कबीरदास ✓

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. इस कथन के अनुसार अगर आप शिष्ट हैं तो इसका मतलब है आप में मानवीय गुण हैं। शिष्टाचार जैसे दूसरों का आदर करना, सबसे मीठा बोलना, क्रोध न करना– ये सभी मानवीय गुण हैं जो कि केवल शिष्ट व्यक्ति में ही हो सकते हैं। ये गुण हमारे शिष्ट व्यवहार को तो दिखाते ही हैं, साथ ही साथ ये हमें मानसिक तनाव से भी बचाते हैं। किसी का बुरा करने पर हमें भी मानसिक तनाव होता है तथा यह शिष्ट व्यवहार भी नहीं है। बुरा करन पर हमें दैनिक जीवन में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसलिए किसी का बुरा न करें व मानसिक तनाव और कठिनाइयों से बचें।
2. इन पंक्तियों में कहा गया है कि जो व्यक्ति ईर्ष्या नहीं करता यानी किसी की तरक्की से नहीं जलता कभी किसी पर क्रोध नहीं करता, क्रोध में कटु वचन नहीं बोलता और न ही अपने ऊपर अंहकार (घमंड) करके दूसरों को नीचा दिखाता है, वही व्यक्ति 'शिष्ट' कहलाने योग्य है।

(ङ) 1. विन्रमता 2. शिष्टाचार 3. अधिकारी 4. सभ्यातपूर्ण 5. सिद्ध
6. अथर्ववेद 7. विचारपूर्वक 8. सम्मान 9. कल्याण 10. ऋषि

भाषा ज्ञान–

(क) 1. आरक्षित – अनारक्षित 2. कठिन – सरल 3. कठोर – नरम
4. निंदा – स्तुति
5. इहलोक – परलोक 6. अप्रिय – प्रिय 7. गुण – अवगुण
8. भद्र – अभद्र 9. आदर – निरादर 10. शिष्ट – अशिष्ट

(ख)

	शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द
1.	कठिनाई	आई	कठिन
2.	विनम्रता	ता	विनम्र
3.	विशेषता	ता	विशेष
4.	मानवीय	ईय	मानव
5.	सामाजिक	इक	समाज

6.	पल्लवित	इत	पल्लव
7.	अनुशासित	इत	अनुशासन
8.	साधारणतया	तया	साधारण
9.	संस्थागत	आगत	संस्था
10.	प्राकृतिक	इक	प्रकृति

(ग) 1. ताकि – मैं घर जा रहा हूँ ताकि दादीजी को दवा पिला सकूँ।
2. यानी – 'प्राइवेट' यानी निजी रूप से।
3. अथवा – आम अधिक मीठा है अथवा सेब?
4. और – राघव और राहुल भाई हैं।
5. परंतु – वह निर्धन है परंतु अत्यंत ईमानदार है।
6. अर्थात् – हमें 'हिंसा' अर्थात लड़ाई नहीं करनी चाहिए।

(घ) 1. वार्ता + आलाप – वार्तालाप
2. वन + औषधि – वनौषधि
3. गुरु + उपदेश – गुरूपदेश
4. वि + आकुल – व्याकुल
5. शिक्षा + अर्थी – शिक्षार्थी
6. परम + ओज – परमौज

(ङ) 1. (रिया) (पक्षी) (दाना)
2. (तुलसी) (कवि)
3. (धन)
4. (देश) (भारत)
5. (लड़के) (लड़कपन)

रचनात्मक ज्ञान–

(क) 1. हम अपने आस-पास के लोगों के साथ शिष्टता का व्यवहार इस प्रकार से कर सकते हैं-
– बड़ों को आदर देकर व उनसे मधुर वाणी में बात करके।
– माता-पिता का कहना मानकर।
– छोटों के साथ विनम्रता से बात करके।
– किसी के साथ लड़ाई-झगड़ा न करके।
– अपने गुस्से पर काबू रखकर।
* विद्यार्थियों के विचार स्वयं सोचकर बताएँगे।

(ख) शिष्टाचार– मनुष्य पृथ्वी पर ईश्वर की सबसे बुद्धिमान रचना है। हम सभी समाज में रहते हैं इसलिए उसके अनुसार सोचने, बात करने और कार्य करने के बारे में हमें पता होना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों को, परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों, दोस्तों, शिक्षकों आदि के साथ उनके व्यवहार के बारे में सिखाना चाहिए। अच्छे शिष्टाचार वाला व्यक्ति भावनाओं और परिवेश में रहने वाले दूसरे व्यक्ति की भावनाओं के प्रति सम्मान दिखाता है। वह सभी के साथ समान संबंध दिखाता है। शील, विनम्रता, दया और शिष्टाचार एक अच्छे व्यवहार वाले व्यक्ति के लक्षण हैं। अच्छे शिष्टाचार का अभ्यास करना और दिनभर इनका पालन करना निश्चित रूप से जीवन को पल्लिवत करता है और जीवन में गुणों को जोड़ देता है। कुछ ऐसी आदते हैं, जिन्हें हमें अपने दैनिक जीवन में ज़रूर रखना चाहिए जैसे– हमें दूसरों के साथ चीज़ें साझा करने की आदत सीखनी चाहिए, हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए, हमें विनम्र बनना चाहिए, हमें दूसरों की संपत्ति का सम्मान करना चाहिए और कुछ भी उपयोग करने से पहले अनुमति लेनी चाहिए, हमें अपने शिक्षकों, माता-पिता, अन्य बुज़ुर्गों और वरिष्ठ नागरिकों के साथ विनम्र व्यवहार करना चाहिए। जीवन में अच्छे शिष्टाचार बहुत आवश्यक हैं क्योंकि वे हमें समाज में अच्छा व्यवहार करने में मदद करते हैं। अच्छे शिष्टाचार हमें लोगों का दिल जीतने में मदद करते हैं इसलिए एक अच्छा और शिष्ट व्यक्ति बनने का प्रयास निरंतर करते रहिए।
* विद्यार्थी 'शिष्टाचार' पर भाषण स्वयं प्रस्तुत करेंगे।

(ग) शिष्टाचार (कविता)

उदाहरण कविता
बड़ों का आदर, छोटों से प्यार
शिष्ट आचरण ही शिष्टाचार।
धन, दौलत, रुतबे का न करो अभिमान
किसी का निरादर न करना यही है संस्कार
ममता, करुणा हृदय में रखो अपार।
पर हो रहा हो.... जहाँ भी अत्याचार।
आवाज़ उठाओ न बनो लाचार।।

* विद्यार्थी स्वयं कोई कविता या दोहा सोचकर अपनी कार्य पुस्तिका में लिखेंगे।

अध्याय-4

मेंढकी का ब्याह

अभ्यास: (पेज 28)

मौखिक–

(क) 1. लोगों ने पत्रों में पढ़ा था कि कोलकाता-मद्रास की तरफ़ जोर से वर्षा हुई है। इससे लोगों ने सोचा कि वर्षा आगे भी होगी। इसी आशा में लोगों ने अनाज बो दिया था।

2. ग्रामीणों ने इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए हवन, सत्यनारायण की कथा और बकरों-मुरगों का बलिदान आदि सब किए गए।

3. नावते के अनुसार इंद्र देवता को मेंढक बहुत प्यारे लगते हैं। वे जो रट लगाते हैं वो असलियत में इंद्र देवता की जय-जयकार करते हैं। तभी बारिश के मौसम में वर्षा के जल के साथ मेंढक भी बरसते हैं।

4. अत्यधिक वर्षा के कारण नदियों में बाढ़ आ गई, बाँध टूट गए, पोखर व तालाबों में खूब पानी भर गया। खेतों में भी पानी भर गया। सड़कें कट गईं, गाँव के गाँव पानी में डूब गए। जनता और उनके जानवर भी डूब गए और बहुत से तो मर भी गए।

5. नावता ने सुझाव दिया कि मेंढक और मेंढकी के तलाक के बाद पानी बरसना बंद हो जाएगा पर ऐसा कुछ नहीं हुआ इसलिए नावता नौ-दो-ग्यारह हो गया।

लिखित–

1. नावते ने मेंढकी का तलाक इसलिए कराया ताकि पानी बरसना बंद हो जाए। नावते ने मेंढक और मेंढकी को छोड़ दिया। दोनों उछलकर इधर-उधर भाग गए। इस तरह तलाक की प्रक्रिया पूरी हो गई।
2. मेंढकों की 'टर्र-टर्र' को नावते ने दोनों के बीच ब्याह से संबंधित बातचीत बताया।
3. नावते ने बताया कि जैसे लड़के-लड़की का ब्याह होता है, ठीक उसी तरह मेंढक-मेंढकी का ब्याह करो। सगाई, फल-दान, सगुन, तिलक, आतिशबाज़ी, भाँवर, ज्योनार सब धूम-धाम के साथ किया जाए।
4. गाँववालों ने इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए टोने-टोटके, धूप-दीप, हवन, सत्यनारायण कथा, बकरों-मुरगों का बलिदान तथा आखिर में मेंढक-मेंढकी का ब्याह जैसे उपाय किए।
5. गाँववालों को जब पता चला कि कोलकाता और मद्रास में बारिश हुई है और थोड़ी-सी वर्षा गाँव में भी हुई थी। तब लोगों को लगा कि आगे भी वर्षा होगी। इसी आशा में लोगों ने अनाज बो दिए थे।

(ख) 1. (अ) अंधविश्वास 2. (स) इंद्र 3. (स) वृंदावनलाल

(ग) 1. कष्टों 2. नावता 3. चंदन
4. मेंढक 5. जम, हरियाकर

(घ) 1. लोगों ने ब्राह्मण से कहा। 2. नावते ने लोगों से कहा। 3. नावते ने लोगों से कहा।
4. नावते ने अथाई पर बैठे लोगों से कहा। 5. लोगों ने नावते से कहा।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. की तरफ़ 2. के बिना 3. के भीतर
4. के मारे 5. के विपरीत

(ख) 1. दीप– दीपक, चिराग, प्रदीप 2. धूप– आतप, सूर्यातप, धाम 3. पत्र– चिट्ठी, खत
4. स्वामी– मालिक, अधिपति 5. ब्याह– शादी, गठबंधन, विवाह

(ग) 1. नाक काटना– बदनाम करना
भरी सभा में उसने मेरी नाक काट दी।
2. कारोबार ठप्प होना– असफल हो जाना
करोना काल में बहुत से लोगों के कारोबार ठप्प हो गए।
3. ज़ोखिम लेना– खतरा मोल लेना
सरहद पर सैनिक ज़ोखिम लेकर हमारी रक्षा करते हैं।
4. नौ-दो-ग्यारह होना– भाग जाना
अध्यापिका को देखकर बच्चे मैदान से नौ-दो-ग्यारह हो गए।

(घ) 1. भवदीय – भवदीया 2. रूपवान – रूपवती 3. नौकर – नौकरानी
4. फूफा – बुआ 5. साधु – साध्वी

रचनात्मक ज्ञान–

(क) * विद्यार्थी 'पर्दा प्रथा' से संबंधित जानकारी प्राप्त कर उससे संबंधित वार्तालाप कक्षा में स्वयं करेंगे। उदाहरण बिंदु वार्तालाप के लिए
1. 'पर्दा प्रथा' विश्व में बहुत समय से प्रचलित है।
2. सभी कट्टर मुस्लिम देशों तथा भारत की कुछ हिंदू जातियों में भी यह प्रथा प्रचलित है।
3. मुस्लिम महिलाएँ 'बुर्का' कुछ खास जगहों पर खुद को पुरुषों की निगाह से दूर रखने के लिए पहनती हैं।
4. हिंदू स्त्रियाँ भी अपने से बड़ों (बुर्जुगों) के सामने तथा अंजान लोगों के सामने घूँघट करती हैं। पर यह प्रथा अधिकत्तर जगहों पर खत्म हो चुकी है।
5. यह एक अभिशाप है। इससे लड़के-लड़की के बीच समानता के अधिकार का हनन होता है।
6. राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने पर्दा प्रथा का डटकर विरोध किया था।
7. राजस्थान के कुछ गाँवों में यह प्रथा आज भी प्रचलित है।

(ख) प्रचलित अंधविश्वास
उदाहरण उत्तर
1. देवदासी प्रथा– यह प्रथा आज भी महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, ओडिसा के मंदिरों में प्रचलित है। इसमें महिलाएँ खुद को धार्मिक स्थल में समर्पित करके देवता की सेवा करती हैं।
2. नज़र बट्टू– लोग आज भी नींबू और मिर्च को गाँठ बाँधकर नए घरों और दुकानों पर लगाते हैं। यह अंधविश्वास है कि इससे घर और दुकान को किसी की बुरी नज़र नहीं लगती।
3. नदी में सिक्के फेंकना– माना जाता है कि नदी में सिक्के फेंकने से सफलता मिलती है।
4. नारियल तोड़ना– लोग जब भी नया घर या नई गाड़ी लेते हैं तो नारियल तोड़ते हैं। ऐसा माना जाता है कि नारियल तोड़ना शुभ होता है।
5. सूर्य डूबने के बाद सफ़ाई– ऐसा अंधविश्वास है कि सूर्य के डूब जाने के बाद घर में झाड़ू नहीं लगाना चाहिए। यह दुर्भाग्य लाता है।
6. सूर्यग्रहण– सूर्यग्रहण के समय घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए ना ही कोई नया काम शुरु करना चाहिए। इस समय मंदिरों के द्वार भी बंद कर दिए जाते हैं। इस समय को अशुभ मानने का अंध विश्वास किया जाता है।

* विद्यार्थी अपनी जानकारी के आधार पर कुछ अन्य अंधविश्वास भी अपनी कार्य-पुस्तिका में लिख सकते हैं।

अध्याय-5

अतिथि देवो भवः

अभ्यासः (पेज 34)

मौखिक–

(क) 1. लेखक को इस बात पर नाज़ (अभिमान) है कि उसने कभी अकेले खाना नहीं खाया।

2. पुराणों में लेखक को अतिथि सत्कार से संबंधित कई कहानियाँ मिली थीं।

3. ''मैं अतिथियों से नहीं घबराता पर 'असमय' से ज़रूर काँपता हूँ।'' लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि वह कामकाजी आदमी है और व्यस्त रहता है। ऐसे में जब अचानक से कोई मेहमान आ जाए तो वह उनकी देखभाल अच्छे से नहीं कर पाता है।

4. लेखक के अनुसार जब मेहमान बताकर आते हैं तो वे केवल 'अन्न' खाते हैं पर जब मेहमान बिना बुलाए या बिन बताए 'असमय' आते हैं तो जान खा जाते हैं क्योंकि तब व्यक्ति को उनके लिए भोजन में क्या रखना है? कहाँ से लाना है? कितना लाना है? आदि चिंताएँ व्यक्ति की 'जान' खा जाती हैं।

5. लेखक अपने एक अतिथि का एहसानमंद इसलिए है क्योंकि उसने पत्र के द्वारा लेखक को पहले से ही अपने आने की सूचना बता दी थी।

6. लेखक अपने अतिथियों की वैयक्तिक विशेषताओं का वर्णन इसलिए नहीं करना चाहते क्योंकि अगर वे सभी मेहमानों की विशेषताएँ बताने लग गए तो महा ग्रंथ 'महाभारत' के समान ही एक अन्य महा ग्रंथ तैयार हो जाएगा। लेखक के घर आने वाले मेहमानों की संख्या बहुत अधिक है। वे सभी के बारे में नहीं बता सकते।

लिखित–

1. लेखिका के अनुसार बचपन से लेकर अभी तक उनके घर पर बहुत सारे लोग 'अतिथि' के रूप में पधारे हैं। यह लेखक का सौभाग्य है।

2. लेखक ने 'अतिथि' के समानांतर जो दूसरा शब्द गढ़ा है, वह है 'असमय'। उन्होंने यह शब्द इसलिए सोचा क्योंकि 'अतिथि' का अर्थ होता है, जिसके आने की तिथि न हो। ठीक उसी तरह 'असमय' का भी यही अर्थ है जिसका समय न हो। आजकल के अतिथियों के आने और जाने की तिथि निश्चित नहीं होती इसलिए 'अतिथि' और 'असमय' ये दोनों शब्द समानांतर ही हैं।

3. पाठ के आधार पर आजकल हर व्यक्ति इतना व्यस्त है कि दस मिनट के लिए भी हम आराम से नहीं बैठ पाते, बाल-बच्चों के साथ भी बैठने का समय हमारे पास नहीं है। ऐसे में जब कोई मेहमान आ जाए तो हम शंका में आ जाते हैं कि न जाने ये कितने दिन के लिए आए हैं? क्यों आए हैं? आदि तरह-तरह के विचारों से दिल शंकाकुल हो उठता है।

4. पहले और आज के जीवन में बहुत से बदलाव आ गए हैं। पहले मेहमान कभी-कभी आते थे क्योंकि यातायात के साधन भी कम थे तथा लोग व्यस्त भी नहीं थे इसलिए मेहमान आने पर आनंद आता था। आजकल जब मेहमान आते हैं तो खुशी कम होती है क्योंकि हमें खाने, सोने और उन्हें बैठाने की चिंता होने लगती है।

5. लेखक ने नियमित अतिथि उसे कहा है जो नियमित रूप से घर पर आते रहते हैं। लेखक के घर जो नियमित अतिथि आते थे उन्हें खाने में गाढ़ी दाल ही पसंद आती थी और उस गाढ़ी दाल को निगलने के लिए देसी-घी भी चाहिए।

6. लेखक पहुँचे हुए संत की तरह तब चुप हो जाते हैं जब कोई कहता है कि वे शुद्ध घी खाते हैं। आजकल के समय में शुद्ध-घी बाज़ार में मिलता ही नहीं है।

(ख) 1. (स) राजा मोरध्वज ✓ 2. (स) असमय ✓ 3. (स) असमय से ✓

(ग) 1. अतिथि 2. भाग-दौड़ 3. असमयदेव
4. आसमान 5. आत्मीय 6. पत्नी

(घ) 1. इस कथन के अनुसार हमारे देश में लोग अतिथियों को भगवान मानते हैं इसलिए उन्हें खुश करने के लिए या उनके सत्कार में लोग कुछ भी करने को तैयार हैं जैसे राजा मोरध्वज से अपने पुत्र का वध तक अतिथि सत्कार के लिए कर दिया था।

2. इस कथन के अनुसार लेखक कहते हैं कि उन्हें अतिथियों से डर नहीं लगता पर जब अतिथि बिन बताए आ जाते हैं तब लेखक घबरा जाते हैं। लेखक कामकाजी है। सारा दिन व्यस्त रहता है इसलिए वह बहुत परेशान रहते हैं, ठीक इसी तरह बाकी लोग भी व्यस्त हैं इसलिए अतिथियों का असमय आ जाना सभी को अखरता है।
3. इस कथन के अनुसार वैज्ञानिकों ने लोगों को आराम देने के लिए मशीनें बनाई थीं ताकि लोग अपना कार्य जल्दी समाप्त कर अपना बचा हुआ समय परिवार के साथ बिता पाएँ। पर इंसान मशीनों में मकड़े की तरह उलझ गया है, वह अपने लालच के कारण और अधिक व्यस्त हो गया है तथा उसके पास अपने परिवार के साथ बिताने के लिए समय ही नहीं बचा है। इस प्रकार हम अपनी आदमियत भी खोते जा रहे हैं।
4. इस कथन के अनुसार लेखक कहना चाहते हैं कि अगर मुझे मेहमानों का बिना बताए आना पसंद नहीं, उनका महीने के अंत में आना नहीं पसंद और उनका नियमित रूप से आना भी नहीं पसंद तो मुझे भी इन सभी बातों का ध्यान रखना चाहिए कि मैं भी किसी के घर बिन बताए, महीने के अंत में या नियमित रूप से जाने से बचूँ क्योंकि मैं भी तो किसी के लिए अतिथि हूँ।

(ङ) 1. राजा मोरध्वज का यश– आज भी अक्षुण्ण है।
2. इस युग में कौन– कामकाजी नहीं है?
3. जिसको देखिए, चेहरे पर– हवाइयाँ उड़ रही हैं?
4. आपको छोड़कर आखिर– वे जाएँ भी कहाँ?
5. यों गौणरूप से एक– छोटा-मोटा दूसरा काम भी है।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. अतिथि देवो भव: 2. अर्थात् 3. स्वभावत:
4. खाद्यान्न 5. उदाहरणार्थ 6. हृदय

(ख)	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
1.	अतिथि	अ	तिथि
2.	सौभाग्य	सौ	भाग्य
3.	असमय	अ	समय
4.	विखंडित	वि	खंडित
5.	अविश्वास	अ	विश्वास

(ग) 1. काम पूरा नहीं होने तक चैन से नहीं बैठूँगा या काम पूरा करके ही चैन से बैठूँगा।
2. पाठ खत्म करके ही खाना खाऊँगा।
3. पिताजी के आने तक बच्चे शोर मचाते रहेंगे।

(घ) 1. पुत्र– बेटा, सुत, तनुज 2. आदमी– इंसान, मनुष्य
3. पत्नी– अर्धांगिनी, भार्या, प्राणप्रिया, जोरू
4. अतिथि– मेहमान, आगंतुक 5. आसमान– आकाश, नभ, गगन

रचनात्मक ज्ञान–

(क) इस पाठ में आजकल लोगों के व्यवहार में जो बदलाव आया है उस पर व्यंग्य किया गया है। आजकल के समय में लोगों को अतिथियों का घर पर आना बहुत से कारणों से पसंद नहीं है। पहले की तरह लोगों के पास बड़े घर, समय, प्यार नहीं है। सभी लोग इतने व्यस्त हो गए हैं कि अगर अचानक से कोई अतिथि घर पर आ जाए तो हमें परेशानी हो जाती है। हम उनके खाने-पीने और रहने की चिंता करने लगते हैं। हमारा आचरण भी बदल जाता है इसलिए बहुत आवश्यक है कि अतिथि भी ध्यान रखें कि वे बिन बताए किसी के घर न जाएँ तथा जब भी जाएँ अधिक समय तक वहाँ न रहें, न अधिक इच्छाएँ रखें।

* विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(ख) अतिथियों के संबंध में धारणा–
1. घर आने वाला हर व्यक्ति देवता के समान है।
2. हमें उनका उचित आदर-सत्कार करना चाहिए।

3. अगर मेहमान आने से पहले सूचित कर रहे हैं तथा हम व्यस्त हैं तो उन्हें कुछ दिनों के बाद आने को कह सकते हैं।
4. मेहमानों के साथ प्रेमपूर्वक बातचीत करें।
5. जब तक मेहमान घर पर हैं, उनकी मनपसंद चीज़ें बनाने का प्रयास करें। अपनी आय से अधिक न करें पर उतना करें जितने में मेहमान खुश रहें।
6. मेहमानों के आगमन से लेकर उनके प्रस्थान करते तक घर में खुशी का माहौल बनाकर रखें।

* विद्यार्थी अपनी तथा अपने परिवार की धारणाएँ स्वयं रखेंगे।

(ग) अतिथि देवो भव:

अतिथि देवो भव: का अर्थ है ''अतिथि देवता के समान है।'' जिस प्रकार हम देवता को खुश करने के लिए विभिन्न काम करते हैं, ठीक उसी प्रकार अतिथियों को खुश करने के लिए भी हमें उनका पूर्ण आदर-सत्कार करने की आवश्यकता है। आजकल के समय में जहाँ हम सभी के पास अधिक समय नहीं है। सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं तथा चीज़ें भी बहुत महँगी हो गई हैं, इस समय यह भाव कि अतिथि को देवता के समान पूजा जाए थोड़ा कठिन जान पड़ता है। आधुनिक युग में हमारे पास सभी सुख-साधन उपलब्ध हैं लेकिन समय की कमी के कारण अतिथि भी अधिक समय तक कहीं नहीं रहते और न ही लोग अतिथियों का घर में अधिक आना पसंद करते हैं। अतिथिदेवो भव: की अवधारणा से मैं पूर्णत: सहमत नहीं हूँ क्योंकि एक कहावत है, जितनी चादर हो, उतने ही पैर पसारने चाहिए यानी अगर मेरे पास खुद के खाने के लिए पैसे नहीं है तो मैं मेहमानो को कैसे खिला सकता हूँ।

* विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें। उनके विचार भिन्न हो सकते हैं।

(घ) मेरे घर में अतिथियों का स्वागत पूरे उत्साह से किया जाता है। उन्हें पूरा मान-सम्मान दिया जाता है। खाने में उनकी मनपसंद चीज़े परोसी जाती हैं तथा अगर वे घर पर कुछ दिनों के लिए रहने वाले हैं तो उनके रहने की पूरी व्यवस्था की जाती है। मैं अतिथियों को खुश रखने का प्रयास करता हूँ, उन्हें अगर कहीं घूमने जाना है तो उन्हें लेकर जाता हूँ। अपने शहर की विशेष इमारतें दिखाता हूँ तथा उनकी ज़रूरत का सामान समय पर उपलब्ध कराकर उनकी मदद करता हूँ।

* विद्यार्थी अपने विचार स्वयं लिखेंगे।

अध्याय-6

नकलची मत बनो पुष्प

अभ्यास: (पेज 40)

मौखिक–

(क) 1. पुष्प ने तितली से कहा, ''तुम घूमती रहती हो आवारा बादल की तरह, उड़ती रहती हो स्वतंत्र उद्यान में। मैं भी उड़ना चाहता हूँ तुम्हारी तरह।''
2. पंखों की सहायता से उड़ा जा सकता है।
3. वृक्ष इसलिए नहीं उड़ सकते क्योंकि उनकी जड़ें भूमि में होती हैं।
4. जब पुष्प ने वृक्ष से आग्रह करते हुए कहा कि चलो, हम भी उड़ चलते हैं आसामान में और वृक्ष ने उसकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया तब पुष्प को ऐसा लगा कि वृक्ष उसकी बातों का कोई उत्तर न देकर उसका अपमान कर रहा है।
5. पुष्प को स्वप्न में ऐसा महसूस होता है कि जैसे वह उड़ रहा है पर उसके आसपास मँडराने वाली तितली गायब है। फिर पुष्प को प्यास लगती है, पर उसे कहीं पानी नहीं मिल रहा है। कुछ समय बाद उसे लगता है जैसे वह साँस भी नहीं ले पा रहा है और कोई भी उसके पास नहीं है।
6. पुष्प के उड़ने पर वह अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाएगा क्योंकि वह वृक्ष से अलग हो जाएगा और उस तक प्रचुर मात्रा में पानी व खाना नहीं पहुँच पाएगा।

लिखित–

(क) 1. तितली ने पुष्प को अपने पत्तों को पंख बनाकर उड़ने का सुझाव दिया।

2. वृक्ष की जड़ें भूमि में होती हैं और वह हर दिन पृथ्वी से शक्ति पाकर ऊपर उठता है और बढ़ता है।
3. रात के समय पुष्प एक स्वप्न देखता है कि वह तितली की तरह आकाश में उड़ रहा है। उसके आसपास न तो तितली है न ही कोई और। अचानक से पुष्प को प्यास लगती है पर उसे पानी पिलाने वाला कोई भी नहीं है और वह साँस भी नहीं ले पा रहा है। इन सब बातों से वह परेशान हो जाता है।
4. पुष्प सजावट के काम आते हैं। उनमें से बहुत अच्छी सुगंध मिलती है। लोग पुष्प को बालों में लगाते हैं, इनकी मालाएँ बनाते हैं, भगवान के चरणों में अर्पित करते हैं। इनसे ही मधुमक्खियाँ शहद बनाती हैं।
5. वृक्ष ने पुष्प को नकलची न बनने को कहा तथा कहा कि तुम जो हो, उसी में खुश रहो।
6. पुष्प को वृक्ष की बात सुनकर अच्छा लगा।

(ख) 1. (स) तपस्वी की तरह ✓ 2. (ब) आकाश ✓ 3. (स) किसी ने नहीं

(ग) 1. तितली 2. सुगंध 3. आना 4. आगोश 5. पुष्प

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ङ) 1. वृक्ष ने पुष्प से कहा 2. वृक्ष ने पुष्प से कहा 3. पुष्प ने वृक्ष से कहा
4. तितली ने पुष्प से कहा 5. पुष्प ने तितली से कहा

(च) 1. वृक्ष नींद के आगोश– में चला गया।
2. तुम्हारी सुगंध हवा के साथ– फैल रही है संसार में।
3. तुम बने रहो वृक्ष पर– मुसकराते रहो वहाँ।
4. अपना स्वरूप खोकर– नकलची मत बनो।
5. तितली, भँवरे तुम्हारी सुगंध– पाकर मदमस्त से आते हैं तुम्हारे पास।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. हम– पुरुषवाचक सर्वनाम
2. वह– निश्चयवाचक, क्यों– प्रश्नवाचक सर्वनाम
3. कौन– प्रश्नवाचक सर्वनाम
4. जैसी, वैसी– संबंधवाचक सर्वनाम
5. वह– निश्चयवाचक, अपने आप पुरुषवाचक सर्वनाम
6. हमने– निजवाचक
7. कहीं कुछ– अनिश्चयवाचक सर्वनाम
8. यह वही– निश्चयवाचक सर्वनाम

(ख) 1. स्वरूप– स्+व्+अ+र्+ऊ+प्+अ
2. मदमस्त– म्+अ+द्+अ+म्+अ+स्+त्+अ
3. स्वप्न– स्+व्+अ+प्+न्+अ
4. पुष्प– प्+उ+ष्+प्+अ
5. पत्ता– प्+अ+त्+त्+आ

(ग) 1. प्रतिदिन– प्रति+दिन 2. नकलची– नकल+ची 3. स्वरूप– स्व+रूप
4. सुगंध– सु+गंध 5. अपमान– अप+मान

(घ) 1. स्वप्न– सपना, ख्वाब 2. भगवान– प्रभु, ईश्वर 3. सुगंध– खुशबू, महक
4. पुरुष– नर, आदमी 5. वृक्ष– पेड़, तरु

रचनात्मक ज्ञान–

(क) एक बगीचे में गुलाब का एक पौधा था। एक दिन उस पौधे पर गुलाब का एक सुंदर फूल खिला। सभी उस फूल की प्रशंसा करने लगे। उस पौधे को भी अपनी सुंदरता पर बहुत घमंड हो आया। अचानक हवा चली तो पौधे ने हवा से कहा कि मेर ऊपर खिले फूल में से कितनी अच्छी खुशबू आ रही है। मैं दिखने में भी बहुत सुंदर हूँ इसलिए तुम मुझे जड़ समेत उखाड़ दो ताकि मैं दूसरे बगीचे में भी जाकर अपनी सुंदरता और खुशबू बिखेरूँ। हवा ने उसे कहा कि तुम्हें धरती से पानी, भोजन, मिट्टी मिलते हैं। अगर तुम धरती से

अलग हो गए तो मर जाओगे। पर पौधा जिद करने लगा। हवा ने गुस्से में आकर उसे धरती से जड़ समेत उखाड़ दिया। कुछ समय तक पौधा खुश रहा परंतु कुछ समय बाद पौधा मुरझाने लगा व बेहोश हो गया। हवा को पौधे पर दया आ गई। उसने पौधे को एक माली के चरणों के पास फेंक दिया। माली ने पौधे को उठाकर उसे दोबारा जड़ों समेत मिट्टी में लगा दिया तथा उस पर पानी की बूँदें छिड़कीं। बूँदें पड़ते ही पौधे की जान में जान आई। उसने हवा से क्षमा माँगी और बोला कि 'मुझे क्षमा करें, जो मैंने अपने ऊपर खिले फूल पर घमंड किया। मुझे समझ आ गया है कि मेरा जीवन हवा, मिट्टी, पानी और रोशनी से ही बना है।'' हवा मुसकरा कर आगे बढ़ गई।

* विद्यार्थियों को कहानी स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

(ख)

	पेड़		पुष्प
1.	पेड़ हमें फल और फूल देते हैं।	1.	पुष्प हमें सुगंध देते हैं।
2.	ये हमें शुद्ध हवा देते हैं।	2.	फूलों का प्रयोग हम सजावट के लिए करते हैं।
3.	ये पक्षियों को भी घर देते हैं।	3.	फूलों के रस से शहद बनता है।
4.	इनसे हमें लकड़ी, रबड़, गोंद और दवाइयाँ मिलती हैं।	4.	छोटे जीव-जंतु फूलों का रस पीकर जीवित रहते हैं।
5.	ये हमें प्राण वायु व छाया देते हैं।	5.	फूलों से हम गुलकंद बनाते हैं तथा मिठाइयों में भी इनका प्रयोग करते हैं।

* विद्यार्थी स्वयं सोचकर लिखेंगे कि पेड़ और पुष्प हमें क्या-क्या देते हैं।

(ग) * विद्यार्थी इस कहानी को अभिनय के रूप में स्वयं प्रस्तुत करेंगे।

अध्याय-7

बुखार तो बुखार है

अभ्यासः (पेज 49)

मौखिक–

(क) 1. मौलाना साहब ने शेखचिल्ली को नसीहत दी थी कि अल्लाह ने इंसान को दो हाथ दिए हैं काम करने के लिए इसलिए इंसान को कभी खाली नहीं बैठना चाहिए। कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।
2. शेखचिल्ली घर में रहने के लिए इसलिए मजबूर था क्योंकि मदरसे मे गरमियों की लंबी छुट्टियाँ चल रही थीं।
3. शेखचिल्ली को काम उनकी अम्मी रसीदा बेगम ने बताया था।
4. बुखार होने पर शेखचिल्ली की माँ उसे हकीम साहब के पास ले गई थीं।

लिखित–

1. शेखचिल्ली की माँ ने उसे खुरपी देकर आलू के पौधों पर मिट्टी चढ़ाने का काम दिया था।
2. शेखचिल्ली जिस खुरपी से काम कर रहा था। वह खुरपी धूप की वजह से गरम हो गई थी। शेखचिल्ली को लगा कि खुरपी को बुखार हो गया है इसलिए उसका इलाज कराने के लिए वह हकीम जी के पास गया था।
3. शेखचिल्ली ने खुरपी का बुखार उतारने के लिए उसे एक रस्सी से बाँधकर तालाब के पानी में दो-तीन बार डुबाया और निकाला। इसके बाद खुरपी का तापमान सामान्य हो गया था।
4. जब रसीदा ने देखा कि शेखचिल्ली ने उम्मीद से अधिक आलू की क्यारियाँ तैयार कर दी हैं और वे भी बिलकुल सीधी क्यारियाँ तब रसीदा बेगम बहुत प्रसन्न हुईं।
5. पड़ोस के घर की बूढ़ी औरत को तेज़ बुखार था तथा सभी हकीम साहब को लाने के बारे में सोच रहे थे। शेखचिल्ली के पिता हकीम जी को लेने चले गए थे तथा शेखू की अम्मी पड़ोस के घर में चली गई थीं।

6. शेखचिल्ली ने कहा कि उसे हकीम जी ने बुखार उतारने का नुस्खा बताया है। दादी जी को सामने वाले तालाब में दो-तीन डुबकियाँ दिलवा दें। इससे इनका बुखार छू-मंतर हो जाएगा।
7. बूढ़ी औरत पर पानी में डुबकी लगाने का यह प्रभाव पड़ा कि उसकी हालत और खराब हो गई और उसकी साँसें उल्टी चलने लगीं।
8. जब हकीम साहब को पता चला कि शेखचिल्ली ने खुरपी के बुखार उतारने का नुस्खा वृद्ध महिला का बुखार उतारने के लिए आजमाया है तो वे नाराज़ हुए।

(ख) 1. (अ) मदरसा ✓ 2. (ब) मौलाना साहब ने ✓ 3. (ब) शेखचिल्ली ✓

(ग) 1. इनसान 2. आलू 3. खुरपी 4. मिट्टी, खुरपी 5. हकीम साहब

(घ) 1. शेखचिल्ली ने– अम्मी से 2. अम्मी ने– शेखचिल्ली से 3. अम्मी ने– शेखचिल्ली से
4. हकीम साहब ने– शेखचिल्ली से 5. शेखचिल्ली ने– लोगों से
6. हकीम साहब ने– शेखचिल्ली से

(ङ) 1. संयोगवश 2. सामान्य 3. संजीदगी 4. कामयाबी 5. महिलाएँ
6. नसीहत 7. इनसान 8. उत्साहपूर्वक 9. दोपहर 10. अंदाज़

भाषा ज्ञान–

(क) 1. दहीबड़ा– दही में डूबा हुआ बड़ा 2. शोकाकुल– शोक से आकुल
3. जलधारा– जल की धारा
4. मालगाड़ी– माल के लिए गाड़ी 5. रोगमुक्त– रोग से मुक्त

(ख)

	शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
1.	उत्साहपूर्वक	–	पूर्वक
2.	शर्तिया	–	इया
3.	बीमार	बी	–
4.	थमाई	–	आई
5.	तापमान	–	मान

(ग) 1. सामान्य – असामान्य 2. कामयाब – नाकामयाब 3. खुश – नाखुश
4. उत्साह – निरुत्साह 5. शिक्षा – अशिक्षा

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) बुखार होने की स्थिति में मैं सबसे पहले थर्मामीटर की मदद से अपना बुखार देखती हूँ। इसके पश्चात् मैं घर के पास उपलब्ध डॉक्टर के पास जाकर उचित दवाई उनके कहे अनुसार लेती हूँ।
उस समय मैं अपनी माँ द्वारा बनाए गए भोजन को ही ग्रहण करती हूँ तथा चाय में तुलसी और अदरक डालकर पीती हूँ क्योंकि ये दोनों ही औषधी के रूप में कार्य करती हैं।
* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं लिखने के लिए या प्रस्तुत करने के लिए कहें।

(ख) 'जान है तो जहान है'
मनुष्य का जीवन एक अनमोल उपहार है। यदि जीवन ही नहीं रहेगा तो जीवन की उपलब्धियाँ, पैसा हर चीज़ बेकार हो जाती हैं। व्यक्ति के जीवन में स्वास्थ्य ही अधिक मूल्यवान होता है। कहा गया है कि यदि जीवन में धन गया तो कुछ भी नहीं गया परंतु यदि स्वास्थ्य गया तो सब कुछ गया। स्वस्थ व्यक्ति ही सफलता के लिए निरंतर प्रयास करता है। अस्वस्थ व्यक्ति तो पहले से ही अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंतित होता है फिर सफलता की तरफ़ ध्यान दे पाना अस्वस्थ व्यक्ति के लिए काफ़ी कठिन हो जाता है। जब करोनो वायरस फैला तब बहुत से युवाओं ने अपनी जान खोई। हमने बचाव के लिए मास्क पहनें, सोशल डिस्टेंसिंग अपनाई, सारी व्यवसायिक गतिविधियाँ भी रोक दीं क्योंकि हमें पता है कि 'जान है तो जहान है।' हम अपनी सामान्य जिंदगी में भी बहुत-सी छोटी-छोटी गलतियाँ करते हैं तथा अपनी जान ज़ोखिम में डालते हैं। जैसे– हेलमेट न पहनना, यातायात के नियमों का पालन न करना। इस कारण बहुत से लोग जान से भी हाथ धो बैठते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति सजग रहना चाहिए तथा अपने जीवन के महत्तव को समझकर छोटी-छोटी असावधानियों से दूर रहना चाहिए।
* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-8

अंधकार की नहीं चलेगी

अभ्यासः (पेज 53)

मौखिक–

(क) 1. सुबह तक सूरज सोया हुआ है।
2. सूरज कोहरे से डर रहा है।
3. सुबह काम पर जाते समय सूरज डरा-डरा रहता है।
4. कोहरा सूरज को ढाँप लेता है।
5. कवि, ज्ञानी व्यक्ति, बच्चे और बूढ़े सूरज का उदाहरण (नाम) देकर दुख से बाहर आकर चमकने की सलाह देते हैं।

लिखित–

1. माँ सूरज को उठाते हुए कह रही है कि सुबह हो गई है, उठ जाओ। आजकल तुम खोए-खोए और डरे-डरे से रहते हो। अगर तुम्हें कोई कष्ट है तो मुझे बताओ।
2. सूरज कोहरे (परेशानियों) के चुंगल से बाहर निकलना चाहता है। पर कोई उसका साथ नहीं दे रहा।
3. माँ ने सूरज से कहा कि तुम कोहरे (परेशानियों) से कैसे घबरा सकते हो। तुम तो हमेशा कोहरे को दूर कर चमकते आए हो। तुम्हारी मेहनत व अथव प्रयास से अँधेरा दूर भाग जाता है। तुम बिना चिंता के कोहरे व अंधकार (परेशानियों) से बाहर आने की कोशिश करो। जीत तुम्हारी होगी क्योंकि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
4. सूरज कई दिनों से खोया-खोया इसलिए है क्योंकि उसे कोहरा ढक लेता है यानी उसे जीवन में आने वाली परेशानियों, दुखों ने घेरा हुआ है।
5. सूरज के आने पर अँधेरा (दुख, पीड़ा, परेशानियाँ) दूर भाग जाता है।

(ख) 1. (ब) खोया-खोया 2. (अ) कोहरा 3. (स) सूरज
4. (ब) झूठे

(ग) 1. चँगुल – पकड़ 2. निश्चिंत – चिंता रहित 3. सदा – हमेशा
4. कोहरा – धुँध 5. कष्ट – दुख

भाषा ज्ञान–

(क) 1. दौड़ रहा है 2. लगा रही है 3. खा रही है
4. चल रही है 5. बना रहे हैं।

(ख) 1. माँ– माता, जननी 2. सूरज– रवि, सूर्य 3. पुत्र– तनय, बेटा
4. विजय– जीत, फतह, जय 5. बूढ़ा– वृद्ध, बुजुर्ग

(ग) 1. जागना– सोना 2. विजय– पराजय 3. लेना– देना
4. अँधेरा– उजाला 5. प्रेम– घृणा

(घ) 1. सुबह– सूरज सुबह-सुबह अपनी किरणों से सारे विश्व को जगाता है।
2. कष्ट– अगर आपको मेरे कारण कोई कष्ट हुआ हो तो मुझे माफ़ करें।
3. अँधेरा– सूरज की किरणें अँधेरा भगाकर सारे जग में उजाला फैलाती हैं।
4. चक्रव्यूह– अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदना नहीं जानता था।
5. विजय– कौरव और पाँडवों के युद्ध में विजय पाँडवों की हुई थी।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण पंक्तियाँ

मेरी माँ दिन-रात मेरी तथा हमारे परिवार की सेवा में लगी रहती हैं। वे एक कुशल महिला हैं। वे घर के साथ-साथ बाहर का काम भी अच्छे से करती हैं। वे एक पुलिस अधिकारी हैं तथा अपने कार्य के साथ-साथ वे मेरी पढ़ाई पर विशेष ध्यान देती हैं। रविवार के दिन वे हमें बाहर घुमाने लेकर जाती हैं। मैं बड़ी होकर उनका अनुसरण करना पसंद करूँगी। जब मैं कभी-कभी निराश हो जाती हूँ तो वे मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा विभिन्न

उदाहरणों द्वारा देती हैं। उनके चरणों में स्वर्ग है।

* विद्यार्थियों को अपनी माँ से संबंधित कुछ पंक्तियाँ स्वयं लिखने के लिए कहें तथा उन्हें कहें कि वे लिखते समय नए-नए शब्द या विशेषण शब्दों का अधिक प्रयोग करें।

अध्याय-9

पिता का पत्र

अभ्यास: (पेज 58)

मौखिक–

(क) 1. गांधी जी को पत्र लिखने के लिए मिस्टर रीच, मिस्टर पोलक और अपने पुत्र का ख्याल आया।
2. 'बा' गांधी जी की पत्नी थीं। 'बा' के स्वास्थ्य के बारे में डिप्टी गवर्नर ने बताया था।
3. गांधी जी के पुत्र को अक्षर ज्ञान प्राप्त करने का अधिक अवसर प्राप्त नहीं हो पा रहा था इसलिए उन्हें असंतोष था।
4. गांधी जी के अनुसार सच्ची शिक्षा चरित्र-निर्माण और कर्तव्य का बोध है।
5. गांधी जी के अनुसार अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है इसलिए वे गरीबी में जीवन बिताना चाहते थे।

लिखित–

(क) 1. महात्मा गांधी जी ने पत्र अपने पुत्र को लिखा था।
2. गांधी जी ने जेल में चरित्र निर्माण तथा कर्तव्य बोध से संबंधित अनेक पुस्तकें पढ़ी थीं इसलिए उन्होंने कहा कि अक्षर ज्ञान से अधिक चरित्र निर्माण व कर्तव्य बोध पर ध्यान देना ही सच्ची शिक्षा है।
3. गांधी जी के अनुसार उनके जेल में होने के कारण उनके पुत्र को ही बीमार माँ तथा दोनों भाइयो की ज़िम्मेदारी उठानी है। अगर वह यह काम अच्छी तरह और आनंद से करते हैं तो उनकी आधी शिक्षा इसी से पूरी हो जाती है।
4. बारह वर्ष के बाद बच्चों में ज़िम्मेदारी और कर्तव्य का भाव होना चाहिए। उन्हें अपने विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए। उन्हें हर कार्य भार समझकर नहीं बल्कि आनंद का अनुभव करते हुए करना चाहिए।
5. गांधी जी गरीबी को अच्छा इसलिए मानते हैं क्योंकि गरीबी में ही सुख है।

(ख) 1. (अ) एक ✓ 2. (ब) 12 ✓ 3. (स) योग्य किसान ✓
4. (स) महात्मा गांधी ✓

(ग) 1. मेरे 2. शांति 3. तीन 4. औज़ारों 5. गणित, संस्कृत

(घ) 1. इन पंक्तियों के द्वारा गांधी जी हमें यह कहना चाहते हैं कि एक आयु के बाद हमें अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लेना चाहिए। बच्चों को हँसी-मज़ाक छोड़कर सोचना चाहिए कि उनके कर्तव्य क्या-क्या हैं? उन्हें ज़िम्मेदारी उठानी शुरू कर देनी चाहिए। इसी के साथ उन्हें झूठ तथा गुस्से की जगह शांति से व सच से कार्य करने शुरू करने चाहिए। मारपीट की जगह अहिंसा अपनानी चाहिए।
2. गांधी जी के अनुसार अगर हम जीवन में सफल होना चाहते हैं तो अक्षर ज्ञान के साथ-साथ हमें तीन बातों को भी अपने जीवन में धारण करना होगा। इससे हम संसार में कहीं भी चले जाएँ हम अपना निर्वाह आसानी से कर पाएँगे। ये तीन बातें हैं– हमें अपनी आत्मा का ज्ञान होना चाहिए, अपने गुण-अवगुण पता होने चाहिएँ और ईश्वर से प्रेम यानी ईश्वर का डर हमारे मन में होना चाहिए ताकि हम गलत कार्य न करें।

(ङ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. प्रयत्नपूर्वक 2. गवर्नर 3. कर्तव्य 4. भविष्य 5. मूल्यवान
6. सुव्यवस्थित 7. स्वाभाविक 8. संग्रह 9. सूर्योदय 10. स्वास्थ्य

(ख) 1. भविष्यत् काल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल
4. वर्तमान काल 5. भूतकाल

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) यह पाठ पढ़कर मैंने महसूस किया कि जीवन में हमारे माता-पिता हमारे सच्चे मार्गदर्शक होते हैं तथा हमें अच्छे से जानते पहचानते हैं। हमें एक अच्छा इंसान बनाने के लिए वे जितना हो सके उतना प्रयास करते हैं। जब कभी हमें जीवन में कोई संदेह हो तब हमें उनसे सही राय लेनी चाहिए। इस पाठ में मुझे गांधी जी द्वारा बताई गईं तीन बातें बहुत अच्छी व सच्ची लगीं। हम सभी को अपना तथा अपनी आत्मा का ज्ञान होना चाहिए अर्थात हमें अपने गुणों व अवगुणों का पता होना चाहिए। जिस व्यक्ति को अपने अवगुण पता हैं, वह उन्हें ठीक करके दुनिया में कहीं भी जाकर रह सकता है। साथ ही साथ हमारे मन में ईश्वर का डर भी होना आवश्यक है। केवल अक्षर ज्ञान प्राप्त कर हम जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते। जब हमें अपने कर्तव्य पूरे करने आ जाएँ तथा ज़िम्मेदारियाँ उठानी आ जाएँ तब हम आगे बढ़ सकते हैं।

* विद्यार्थियों को अपने विचार रखने के लिए प्रेरित करें।

(ख) उदाहरण अनुच्छेद

गांधी जी ने हमें जीवन से जुड़ीं बहुत-सी बातों के बारे में अपने लेखों द्वारा बताया है। उनके अनुसार जीवन का सच्चा ज्ञान केवल अक्षर ज्ञान नहीं है। सफल व्यक्ति वही है जिसे अपने कर्तव्यों के बारे में पता है तथा जिसे ज़िम्मेदारियाँ उठानी आ जाती हैं। हमें अपने जीवन में सत्य तथा अहिंसा को ही महत्त्व देना चाहिए क्योंकि गुस्से में हम अपना ही नुकसान करते हैं। गांधी जी के अनुसार गरीबी में रहना अधिक सही है क्योंकि अमीर होने पर हमें बहुत-सी चिंताएँ रहती हैं परंतु गरीबी में सुख का एहसास होता है। उनके अनुसार हमें काम की अधिकता से कभी घबराना नहीं चाहिए। सुबह की शुरुआत भगवान की प्रार्थना से करनी चाहिए क्योंकि इससे हमें व हमारी आत्मा को शांति का एहसास होता है।

* विद्यार्थियों को अनुच्छेद स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-10

मन चंगा तो कठौती में गंगा

अभ्यास: (पेज 65)

मौखिक–

(क) 1. संक्रांति का पर्व होने के कारण श्रद्धालु गंगा स्नान के लिए जा रहे थे।
2. पंडित ने रविदास को बुलाकर अपनी जूतों की जोड़ी के बारे में पूछा था।
3. रविदास जी ने गंगा स्नान न जाने का यह कारण बताया कि उन्हें बहुत-से ग्राहकों का काम देना है। वे अपने ग्राहकों को असुविधा में नहीं डालना चाहते हैं।
4. पंडित जी ने जब रविदास द्वारा दी गईं कौड़ियों के गंगा में फेंका तो गंगा मैया ने वे कौड़ियाँ स्वयं हाथ बढ़ाकर लीं तथा एक कंगन पंडित जी को देते हुए कहा कि कंगन रविदास को दे देना। पंडित ने वह कंगन रविदास को न देकर राजा को दे दिया। इस प्रकार पंडित जी ने रविदास जी से छल किया था।
5. पंडित जी ने पुरस्कार के लालच में कंगन राजा को दे दिया था।
6. स्वर्णकार ठीक वैसा कंगन इसलिए नहीं बना पा रहे थे क्योंकि वह एक विलक्षण कंगन था। वह एक दैवी कंगना था जिसे बनाना नामुमकिन था।

लिखित–

1. काशी नगरी के पूर्व में एक छोटा-सा गाँव था। वहाँ के लोग बहुत गरीब थे। रास्ते धूल तथा गड्ढों से भरे थे। मिट्टी मड़ैया थी तथा छप्परों से झोपड़ियाँ बनी थीं।
2. पंडित जी झोपड़ी के सामने रविदास जी से अपने जूते तथा गंगा जी को चढ़ाने के लिए कौड़ियाँ लेने के लिए रूके थे।
3. पंडित जी के बार-बार क्षमा माँगने पर रविदास जी ने उन्हें वचन दिया कि मुसीबत में फँसे ब्राह्मण का संकट दूर करने के लिए वे अपने प्राणों तक का त्याग करने को तैयार हैं।
4. पंडित जी ने दूसरा कंगना प्राप्त करने के लिए रविदास जी को गंगाघाट तक चलने के लिए कहा तथा उसमें चार कौड़ियाँ डालने के लिए कहा। फिर पंडित जी ने रविदास जी को एक बड़े-से बरतन

में पानी लाने के लिए कहा तथा कहा कि उसमें पंडित जी गंगाजल के छींटे मारेंगे। यदि रविदास जी गंगा मैया के सच्चे भगत हुए तो मैया अवश्य उस बरतन में प्रकट हो जाएँगी।

5. पंडित जी मुँह लटकार रविदास जी के पास इसलिए आए थे क्योंकि रानी ने गंगा मैया द्वारा दिए गए कंगन जैसा एक और कंगन पंड़ित जी से माँगा था और कोई भी स्वर्णकार ठीक वैसा कंगन बनाने से मना कर रहा था।
6. पंडित जी द्वारा जब रविदास से बड़ा बरतन माँगा गया तो वे चमड़े भिगोने वाली कठौती ले आए तथा उसमें पानी डालकर रविदास जी ने गंगा मैया का ध्यान किया। इसके बाद गंगा मैया ने प्रसन्न होकर ठीक पहले जैसा कंगन कठौती में रख दिया। इस तरह रविदास जी ने पंडित जी को संकट से बाहर निकाला।
7. दूसरा कंगन मिलने पर पंडित जी की खुशी का ठिकाना न रहा। वह रविदास जी की जय-जयकार करने लगे। यह चमत्कार देखकर वह सुध-बुध खोकर ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाने लगे व ज़मीन पर कूदने लगे। उन्होंने रविदास जी के साथ हुए चमत्कार के बारे में साधुओं, गाँववालों और राजा-रानी को भी बताया।
8. कठौती से कंगन निकलने पर रविदास जी की झोपड़ी के सामने साधुओं की टोली खड़ी हो गई। कुछ समय बाद वहाँ बहुत से लोग (तमाशबीन) जमा हो गए। सभी रविदास जी की जय-जयकार कर रहे थे।

(ख) 1. (ब) चमड़ा छीलने की राँपी 2. (स) कुछ भी नहीं 3. (स) कंगन
4. (स) चमड़ा भिगोने की कठौती 5. (अ) चार कौड़ियाँ

(ग) 1. पंडित जी ने रविदास जी से कहा। 2. रविदास जी ने पंडित जी से कहा।
3. रविदास जी ने पंडित जी से कहा। 4. रविदास जी ने पंडित जी से कहा।
5. पंडित जी ने रविदास जी से कहा।

(घ) 1. फिर भी तुम गंगा– स्नान के लिए नहीं जा रहे।
2. पंडित जी ने कौड़ियाँ– लीं और चले गए।
3. किसी स्वर्णकार से ऐसा– ही दूसरा कंगन बनवाकर दे दो।
4. तुम तनिक मेरे साथ– गंगाघाट तक चले चलो।
5. उधर तमाशबीनों की भीड़– बढ़ती जा रही थी।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. पंडित जी (कर्ता) बड़े उतावले हो रहे थे। (विधेय)
2. वृद्ध पंडितजी (कर्ता) भीड़ से बाहर आए। (विधेय)
3. परेश की भाई दिनेश (कर्ता) सातवीं कक्षा में पढ़ता है। (विधेय)
4. सभी रविदास (कर्ता) जय-जयकार कर रहे थे। (विधेय)

(ख) 1. रविदास 2. पंडित जी 3. माता जी 4. रवि 5. गंगा मैया

(ग) 1. गए 2. हो 3. उन्हें 4. है

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) संत रविदास भारत के एक महान संत, दर्शनशास्त्री, कवि, समाज सुधारक और ईश्वर के अनुयायी थे। रविदास जी के जन्मदिन पर उनके भक्त गंगा स्नान के लिए जाते हैं। रविदास जी जूते बनाते तथा उनकी मरम्मत करते थे। उन्होंने भी अपने बचपन में उच्च जाति द्वारा किए जाने वाले भेदभाव की वजह से बहुत संघर्ष किया था। उन्होंने अपने लेखन द्वारा लोगों को समझाया कि सभी को बिना भेदभाव के प्यार करें। रविदास जी ने सिख धर्म में भी बहुत योगदान दिया था। उनके समय में शुद्रों को ब्राह्मणों की तरह माथे पर तिलक और दूसरे धार्मिक संस्कारों की आज़ादी नहीं थी। संत रविदास जी ने ये सभी क्रियाएँ जैसे जनेऊ पहनना, धोती पहनना, तिलक लगाना आदि निम्न जाति के लोगों के साथ शुरू की थीं। रविदास जी ने बाबर जैसे क्रोधी बादशाह को भी अपना अनुयायी बनाकर गरीबों की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी भक्ति में कोई आडंबर नहीं था। वे एक सच्चे भक्त थे। समाज में बराबरी, सभी भगवान एक हैं,

इंसानियत, उनकी अच्छाई और बहुत से कारणों की वजह से बदलते समय के उनके अनुनायिकों की संख्या बढ़ती जा रही है।

* विद्यार्थी को अपने विचार लिखने के लिए प्रेरित करें।

(ख) उदाहरण कहानी

राजा भगीरथी की कहानी– राज दिलीप के पुत्र का नाम भगीरथ था। राजा दिलीप की इच्छा थी कि उनके पूर्वजों की राख को पवित्र गंगा नदी में बहाया जाए। अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए भगीरथ हिमालय चले गए तथा वहाँ उन्होंने तपस्या की थी। उनकी तपस्या से खुश होकर ब्रह्मा ने उन्हें दो वर माँगने के लिए कहा। राजा भगीरथ ने कहा कि गंगा जल चढ़ाकर वे अपने भस्मीभूत पितरों को स्वर्ग प्राप्त कराना चाहते हैं। इसके बाद गंगा नदी को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने घोर तप किया। गंगा नदी प्रसन्न हो गईं। पर अब समस्या यह थी कि गंगा बहुत शक्तिशाली थी तथा इसके वेग को रोकने की क्षमता केवल भगवान शिव में थी। अब भगीरथ ने शिव का ध्यान किया तथा उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने गंगा को अपने मस्तक पर धारण किया। इसके बाद गंगा नदी भगवान शिव की जटाओं से बहती हुई धरती पर अवतरित हुई।

* अध्यापिका ऊपर लिखी कहानी विद्यार्थियों को सुना सकती है।

(ग) * विद्यार्थी राजा भगीरथ की कहानी स्वयं पुस्तकालय से ढूँढेंगे या अपने बुजुर्गों से मालूम करेंगे।

अध्याय-11

कोणार्क का सूर्य मंदिर

अभ्यास: (पेज 71)

मौखिक–

(क) 1. उड़ीसा अपनी प्राकृतिक सुंदरता, पुरी की रथ यात्रा और कोणार्क के सूर्य मंदिर के लिए प्रसिद्ध है।
2. कोणार्क के सूर्य मंदिर के लिए रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था– कोणार्क में पत्थरों की भाषा मनुष्य की भाषा से श्रेष्ठतर है।
3. कोणार्क के सूर्य मंदिर की खासियत है कि यह सूर्य देवता के रथ के रूप में बना हुआ है। पूरे मंदिर स्थल को बारह जोड़ी पहिए वाले सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ के रूप में बनाया गया है। इसके बारह पहिए बारह महीनों के प्रतीक हैं। पहिए के बीच की आठ तीलियाँ दिन के आठ पहर दर्शाती हैं। इन पर देवी-देवताओं व शिकार और युद्ध के चित्र बनाए गए हैं। मंदिर के आधार की पट्टी पर लगभग दो हज़ार हाथियों की आकृतियाँ हैं।
4. सूर्य देवता के साथ चार स्त्रियाँ सूर्य की चार पत्नियों का रूप हैं।
5. सूर्य मंदिर के ध्वस्त होने का असली कारण विदेशी हमलावरों द्वारा किया गया आक्रमण और यह मंदिर बंगाल की खाड़ी के पास स्थित है इसलिए समुद्र के नमकीन पानी की वजह से भी इस मंदिर को नुकसान पहुँचा है।

लिखित–

1. कोणार्क का सूर्य मंदिर पुरी शहर में स्थित है।
2. सूर्य मंदिर लाल बलुआ पत्थर और काले ग्रेनाइट पत्थरों से बना हुआ है।
3. कोणार्क मंदिर 1238-1264 ई. में गंग वंश के राजा नृसिंहदेव ने बनवाया था।
4. सूर्य देवता के रथ के सारथी अरुण हैं।
5. सूर्य मंदिर का निर्माण 1200 वास्तुकारों और कारीगरों ने कड़ी मेहनत के बाद तैयार किया था।
6. 'कोणार्क' दो शब्दों से मिलकर बना है। कोण और अर्क। 'कोण' का अर्थ होता है कोना और 'अर्क' का अर्थ है सूर्य। 'कोणार्क' का अर्थ है, कोने का सूर्य।
7. 'कोणार्क' के सूर्य मंदिर में सूर्य देवता को मनुष्य के रूप में दिखाया गया है। समाने से देखने पर लगता है कि जैसे सूर्य देव अपने सात घोड़े वाले रथ में बैठकर आए हैं। सूर्य देव जी के दोनों तरफ़ दो-दो स्त्रियाँ बैठी हैं जो कि उनकी पत्नियों को प्रदर्शित करती हैं। इस मंदिर के तीन हिस्से हैं। पहला नृत्य मंदिर, दूसरा जगमोहन मंदिर और तीसरा गर्भगृह। मंदिर के दक्षिणी हिस्से में दो घोड़े भी बने हैं। मंदिर का आँगन बहुत बड़ा है।

8. एक कथा के अनुसार भगवान कृष्ण के बीमार बेटे शांब ने माघ महीने के एक खास दिन यहाँ नहाकर खुद को ठीक किया था। इसी कथा को सच मानते हुए साल के माघ महीने में यहाँ माघ सप्तमी का मेला लगता है।

(ख) 1. (स) केवल एक ✓ 2. (ब) भुवनेश्वर ✓ 3. (स) 65 किमी. ✓
4. (अ) 1984 में ✓ 5. (स) सूर्य को ✓ 6. (अ) मनुष्य ✓

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. कोणार्क मंदिर में देवी-देवताओं की इतनी सुंदर आकृतियाँ बनाई गई हैं कि ऐसा लगता है कि वे अभी बोलने लग जाएँगी। मंदिर में फूल-बेल और ज्यामितीय नमूनों की नक्काशी की गई है। इनके साथ ही मानव, देव, गंधर्व, किन्नर आदि की आकृतियाँ भी बनाई गई हैं। महान कवि व नाटककार रवींद्रनाथ टैगोर इस मंदिर की शिल्पकला से बहुत प्रभावित हुए थे तभी उन्होंने लिखा यहाँ पत्थरों की भाषा मनुष्य की भाषा से श्रेष्ठतर है।

2. पुराणों में कोणार्क मंदिर की स्थापना को लेकर एक प्रसंग प्रसिद्ध है। इसके अनुसार श्राप के कारण श्रीकृष्ण जी के पुत्र शांब को कोढ़ रोग हो जाता है। वह चंद्रभागा नदी के सागर-संगम पर बारह वर्ष तपस्या करते हैं तथा तपस्या से खुश होकर सूर्य देव उन्हें रोगमुक्त करते हैं। रोगमुक्त होकर जब शांब चंद्र भागा सरोवर में स्नान करते हैं तो वे बिल्कुल ठीक हो जाते हैं। तब से यहाँ माघ के महीने में स्नान करने की परंपरा चली आ रही है। लोग अपने रोगों की मुक्ति के लिए यहाँ आते हैं।

3. कोणार्क में नृत्य समारोह भी आयोजित किया जाता है। इसमें मंदिर के सामने एक खुला मंडप बनाया जाता है, जहाँ दिसंबर के महीने में देश-विदेश से कलाकार आकर अपनी कलाएँ दिखाते हैं। इस प्रकार से यह मंदिर विभिन्न संस्कृतियों को मेल गृह भी है। जब कलाकार भव्य तरीके से अपनी कला प्रस्तुत करते हैं तो कला और संस्कृति का अनोखा संगम देखकर मन हर्षित हो उठता है।

(ङ) 1. खासियत – खूबी 2. धरोहर – विरासत 3. प्रयास – कोशिश
4. सारथी – रथ हाँकने वाला 5. स्मारक – यादगार

भाषा ज्ञान–

(क) 1. बलुआ – (अ) उआ 2. पौराणिक – (स) इक 3. धार्मिक – (ब) इक
4. भव्यता – (अ) ता

(ख) 1. आराम + दायक = आरामदायक 2. उद्योग + पति = उद्योगपति 3. त्याग + ई = त्यागी
4. देवी + य = देवीय 5. प्रवेश + द्वार = प्रवेशद्वार

(ग) 1. मालिक नौकर से गाड़ी साफ़ करवाता है।
2. अध्यापक बच्चे से पाठ पढ़वाते हैं।
3. मैंने राधा से पत्र लिखवाया।
4. उसने मुझे मेरी माता से पिटवाया।
5. वह गीता से सबको भजन सुनवाता है।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण नाम

(क) 1. नवीन मंदिर– अक्षरधाम मंदिर, इस्कॉन मंदिर, कमल मंदिर, बिरला मंदिर
प्राचीन मंदिर– जगन्नाथ मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, सोमनाथ मंदिर, ऐरावतेश्वर मंदिर

(ख) प्राचीन समय में राजा-महाराजा किलों और भव्य मंदिरों का निर्माण अपने आपको दूसरे शासकों से अधिक शक्तिशाली दिखाने के लिए तथा अपने साम्राज्य की भव्यता दिखाने के लिए करवाते थे। उनका प्रमुख उद्देश्य अपने साम्राज्य का विस्तार करना होता था इसलिए वे किलों आदि का निर्माण कर लोगों में अपने सम्राज्य के प्रति ईमानदारी का भाव उत्पन्न करते थे। इसी के साथ-साथ कुछ राजा-महाराजा लोगों की भलाई के लिए या सामाजिक कार्यों के लिए भी इमारतें बनवाते थे। किलों का निर्माण अधिकत्तर अपनी प्रजा की सुरक्षा तथा अपनी प्रजा की एकजुटता के लिए भी राजाओं द्वारा किया जाता था।

* विद्यार्थी अपना उत्तर स्वयं देंगे।

(ग) अवलोकन– ताजमहल

भारत विश्व के उन देशों में से एक है, जो अपने अनूठे वास्तु के चलते हर साल देश-दुनिया के लाखों पर्यटकों को अपनी तरफ़ आकर्षित करता है। आज यहाँ कई ऐसे स्मारक हैं, जिनको यदि आप ध्यान से देखें तो आपको भारत के गौरवशाली इतिहास का पता चलता है। इन इमारतों, स्मारकों में अलग-अलग सभ्यताओं और संस्कृतियों की झलक देखने को मिलती है। उत्तर प्रदेश के आगर जिले में स्थित ताजमहल दुनिया के सात अजूबों की सूची में पहले स्थान पर आता है। इसका निर्माण बादशाह शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज की याद में करवाया था। यहीं मुमताज का मकबरा भी है। ताजमहल भारतीय, पर्सियन और इस्लामिक वास्तुशिल्पीय शैली के मिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण 1632 में शुरु हुआ था। 21 ससाल तक इसमें हज़ारों शिल्पकारों, कारीगरों और संगतराशों ने काम किया और 1653 में ताजमहल बनकर तैयार हुआ। यहाँ स्थित मुमताज महल का मकबरा ताजमहल का मुख्य आकर्षण है। सफ़ेद संगमरमर से बना यह मकबरा वर्गाकार नींव पर आधारित है। यह मेहराबरूपी गुंबद के नीचे है और यहाँ एक वक्राकार गेट के जरिए पहुँचा जा सकता है।

* विद्यार्थी किसी अन्य इमारत के बारे में लिख सकते हैं।

अध्याय-12

चाहता हूँ

अभ्यासः (पेज 76)

मौखिक–

(क) 1. इस कविता में कवि धरती माता को अपना तन, मन, जीवन, अपने रक्त का कण-कण, आयु का हर क्षण और अपने घर तक को समर्पित कर रहा है।

2. कवि मातृभूमि से आग्रह कर रहा है कि मैं गरीब आपको अपने जीवन के सिवाय और कुछ नहीं दे सकता क्योंकि आपने हमें बहुत कुछ दिया है इसलिए निवेदन है कि जब मैं इस मातृभूमि की रक्षा करते-करते अपने मस्तक को आपके चरणों में अर्पित करूँ तो आप उसे ज़रूर स्वीकार कर लेना।

3. कवि मातृभूमि से आग्रह कर रहा है कि वह कवि को तलवार दे, कमर पर बाँधने के लिए ढाल दे दो, भाल पर चरणों की धूल तथा आशीर्वाद (सिर पर) क्योंकि कवि मातृभूमि की रक्षा के लिए आगे बढ़ रहा है।

4. कवि मातृभूमि की सेवा करने हेतु सारे मोह के बंधनों– जैसे अपना गाँव, घर-आँगन, बच्चे, परिवार आदि को तोड़ना चाहता है।

लिखित–

1. 'चाहता हूँ' कविता में कवि अपने देश की सेवा के लिए अपना तन, मन, धन और जीवन सब कुछ धरती को समर्पित करने की अभिलाषा व्यक्त कर रहा है।

2. कवि ने स्वयं को अकिंचन इसलिए कहा है क्योंकि हमारी मातृभूमि ने हमें बहुत कुछ दिया है पर हमने अपने देश की सेवा के लिए कुछ नहीं किया। हम अपने देश में आज़ाद हैं, प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेते हैं, खुले आसमान में उड़ते पक्षी देखते हैं पर हमने अपने देश को कुछ नहीं दिया इसलिए हम अकिंचन (गरीब) हैं।

3. इस कविता में कवि उन सभी बंधनों को तोड़ रहा है जो उसकी देशभक्ति के मार्ग में आ रहे हैं। कवि मोह के सभी बंधन जैसे अपने गाँव, घर-आँगन से लगाव, बच्चों और परिवार के सदस्यों का प्यार ये सभी बंधन तोड़ रहा है। कवि ऐसा इसलिए कर रहा है ताकि वह देश की सेवा बिना किसी रोक-टोक के कर पाए।

4. कवि ध्वज इसलिए माँग रहा है ताकि उसके मन में हमेशा देश-सेवा की भावना जागृत रहे। जब भी उसका मन देश सेवा से हटे तब यह ध्वज उसे उसके कर्तव्य के बारे में याद दिलाए कि उसे देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करना है।

5. इस कविता में हमें अपने देश के लिए मर-मिटने की प्रेरणा मिलती है जैसे हमारे सैनिक देश की रक्षा करते समय अपने प्राण तक त्याग देते हैं। ठीक वैसे ही हमें भी निस्वार्थ देश की सेवा करने की प्रेरणा इस कविता द्वारा मिलती है।

(ख) 1. (स) दोनों ✓ 2. (स) गरीब ✓ 3. (स) रामावतार त्यागी ✓

(ग) 1. सिर ✓ 2. मस्तक ✓ 3. फुलवारी ✓ 4. कतरा ✓ 5. तिनका ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. कण-कण 2. क्षण-क्षण 3. तृण-तृण

(ख) 1. समर्पित – स्+अ+म्+अ+र्+प्+इ+त्+अ
2. धरती – ध्+अ+र्+अ+त्+ई
3. बंधन – ब्+अ+न्+ध्+अ+न्+अ
4. आशीष – आ+श्+ई+ष्+अ

(ग) 1. धरती – धरा, ज़मीन, पृथ्वी 2. माँ – माता, जननी 3. आशीष – आशीर्वाद, दुआ
4. सुमन – फूल, कुसुम 5. चमन – बाग, बगीचा, उपवन

(घ) 1. स्वप्न – सपना – मैंने स्वप्न में भगवान श्री कृष्ण के दर्शन किए थे।
2. आशीष – आशीर्वाद – अपने माता-पिता की आशीष से वह इतने ऊँचे पद तक पहुँचा है।
3. समर्पण – अर्पित करना – माँ अपने बच्चों के लिए अपने सुख-चैन का समर्पण कर देती हैं।
4. निवेदन – आग्रह – आपसे निवेदन है कि आप मेरे भाई की शादी में अवश्य आएँ।
5. ऋण – कर्ज़ / उधार – हम अपनी मातृभूमि का ऋण कभी नहीं चुका सकते।

(ङ) 1. (ब) जातिवाचक संज्ञा 2. (अ) भाववाचक संज्ञा 3. (स) व्यक्तिवाचक संज्ञा
4. (अ) भाववाचक संज्ञा

(च) 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) हम अपनी मातृभूमि के बहुत ऋणी है। इस ऋण को हम देश सेवा के द्वारा ही उतार सकते हैं। हमें अपने देश को स्वच्छ रखना चाहिए। आपसी भाईचारा बनाकर रखना चाहिए। जो भी नियम सरकार द्वारा बनाए जाते हैं, उन नियमों का पालन करना चाहिए जैसे यातायात के नियमों का पालन करना, समय पर टैक्स देना आदि। हमें यह भी चाहिए कि हम विदेशों में तथा विदेशियों के सामने अपने देश की अच्छी छवि ही प्रस्तुत करें। इसके लिए अतिथि देवो भव: की नीति अपनाएँ तथा जो लोग विदेश में हमारे देश घूमने आते हैं। उन्हें उचित मान-सत्कार दें। हमें अपने देश की इमारतों को भी गंदा या उन्हें तोड़ना नहीं चाहिए। जहाँ तक हो सके बचपन से ही बच्चों के मन में देश भक्ति तथा देश सेवा की भावना को पैदा करनी चाहिए। जिस प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों ने तथा हमारे सैनिक हमेशा देश के लिए प्राण त्यागने के लिए आतुर रहे हैं, ठीक वैसे ही हमे भी तन, मन, धन से अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए।

* विद्यार्थियों को अपने विचार रखने के लिए प्रेरित करें।

(ख) * विद्यार्थी स्वयं पुस्तकालय में से देश भक्ति से संबंधित कोई कविता चुनकर कक्षा में सुनाएँगे।

अध्याय-13

अद्भुत प्रतिभा

अभ्यास: (पेज 82)

मौखिक–

(क) 1. आयशा को चित्रकारी करना बहुत पसंद था।
2. सीमा एक सरकारी संस्थान में कार्यरत थी।
3. सीमा बाल कहानियाँ लिखती थीं।
4. सीमा ने आयशा को 'कला एवम् संस्कृति' संस्था द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में भाग दिलाया।
5. आयशा समाचार पत्र में मुख्य अतिथियों द्वारा पुरस्कार देते समय खींची गई अपनी फोटो को देखकर दंग रह गई।

लिखित–

1. आयशा एक होनहार बच्ची थी। वह पढ़ने में मेधावी तो थी ही साथ-ही साथ वह चित्रकारी भी करती थी। एक बार उसने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया था जिसमें उसे प्रथम पुरस्कार मिला था तथा उसकी फोटो भी समाचार पत्र में छपी थी। आयशा को 21000 रुपये का पुरस्कार तो मिला ही साथ ही उसके चित्रों को प्रदर्शनी में शामिल करने के लिए भी कहा गया।
2. सीमा के सहकर्मी तथा रिश्तेदार कहते थे कि पिता का अभाव आयशा को कभी भी एक संपूर्ण व्यक्तित्व में नहीं ढलने देगा। वे ऐसा इसलिए कहते थे क्योंकि सीमा का अपने पति से तलाक हो चुका था।
3. अपनी माँ की फोटों को देखकर आयशा कहती थी कि ''मम्मी मैं भी एक दिन आपके जैसी बनूँगी। देखना फिर मेरी फोटो भी पत्रिकाओं में छपेगी।''
4. 'कला एवं संस्कृति' संस्था का कार्य समय-समय पर लोगों की प्रतिभा उभारने के लिए प्रतियोगिताएँ आयोजित कर विजेताओं को राष्ट्र स्तर पर पहचान दिलाना था।
5. आयशा ने 'प्रदूषण पर रोक' विषय पर बहुत खूबसूरत चित्र बनाया था। आयशा ने सभी प्रकार के प्रदूषणों को संकेतों से बनाकर उनमें बहुत कुशलता से रंग भरे थे।
6. आयशा अपनी फोटो अपने सभी दोस्तों और अध्यापकों को दिखाना चाहती थी।
7. आयशा ने अपनी माँ के गले लगते हुए बोली कि "मम्मी मुझे पहला स्थान या मेरी फोटो समाचार पत्र में इसलिए छपी क्योंकि आपने हमेशा मेरा साथ दिया तथा मुझे आगे बढ़ने का मौका दिया। आपने मेरी सहेलियों के माता-पिता की तरह मुझे आगे बढ़ने से नहीं रोका बल्कि मुझे मेरा चित्रकारी का शौक पूरा करने दिया।"

(ख) 1. (स) सातवीं ✓ 2. (स) कहानी ✓ 3. (स) दोनों ✓

(ग) 1. ड्राइंग शीट, ढेरों रंग 2. आयशा 3. चित्र
4. चित्रकला 5. 'प्रदूषण पर रोक'

(घ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓
6. ✓

(ङ) 1. यह देखकर सीमा की आँखों– से खुशी के आँसू बह निकले।
2. पुरस्कार लेने के बाद आयशा– अपनी माँ से लिपट गई।
3. आयशा की फोटो देखते ही सीमा– खुशी से उछल पड़ी।
4. सीमा बाल-कहानियाँ– अधिक लिखती थी।
5. हर तरह की शीट आयशा– के पास थी।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. मेधावी – नालायक 2. प्रकाशित – अप्रकाशित 3. आनंद – वेदना
4. कुशाग्रता – कुंद
5. दंग – विनीत 6. सफलता – असफलता 7. पुरस्कार – दंड
8. प्रतिष्ठित – अप्रतिष्ठित

(ख) 1. चित्रकारी 2. ग्यारह 3. गर्व 4. व्यक्तित्व
5. प्रकाशित 6. प्रतियोगिता 7. माध्यम 8. संस्कृति

(ग) 1. आयशा बहुत होनहार लड़की है।
2. आयशा प्रतियोगिता जीतेगी।
3. सीमा आयशा को आगे बढ़ाने का हर संभव प्रयास करेगी।
4. आयशा प्रतियोगिता जीतकर बहुत खुश थी।
5. आयशा अपना प्रमाण पत्र अपने मित्रों को दिखा रही है।

(घ) 1. आयशा कहती थी, ''मम्मी मैं भी एक दिन आपके जैसी बनूँगी।''
2. चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन एक प्रसिद्ध संस्था 'कला एवं संस्कृति' द्वारा किया जा रहा था।
3. सीमा ने कहा, ''हाँ बेटा ज़रूर दिखाना।''

4. ये सब शौक पूरे करके क्या करोगी?
5. उसने चित्र को ध्यान से देखा।
6. धीरे-धीरे आयशा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने का आनंद उठाने लगी।
7. चित्र का विषय 'प्रदूषण पर रोक' रखा गया था।

(ङ) 1. क्+आ+र्+य्+अ+र्+अ+त्+अ
2. भ्+अ+व्+इ+ष्+य्+य+अ+त्
3. आ+य्+ओ+ज्+अ+न्+अ
4. प्+र्+अ+त्+इ+भ्+आ

(च) 1. उसका भाई शिक्षक है। 2. वह मालकिन अत्यंत कंजूस है।
3. चुहिया और शेरनी में मित्रता हो गई।
4. यह मोरनी अत्यंत सुंदर है। 5. मेरी पुत्री बहुत होनहार है।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

1. यदि मैं आयशा के स्थान पर होती तो मैं भी अपने शौक को पूरा करती तथा अपनी माँ को अपने शौक के बारे में ज़रूर बताती। मैं भी दिल लगाकार अपना कार्य करती तथा मेरी भी मेहनत इसी प्रकार रंग लाती व प्रतियोगिता जीतकर मैं अपने माता-पिता का नाम रोशन करती।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।

(ख) उदाहरण उत्तर

आयशा को आगे बढ़ाने में उसकी माँ ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे तलाकशुदा थीं फिर भी उन्होंने अपनी बच्ची को आत्मनिर्भर बनाने में तथा उसके चित्रकारी के शौक को पूरा करने में अहम योगदान दिया। उन्होंने आयशा को चित्रकारी करने के लिए रंग और तरह-तरह की शीट लाकर दीं व उसे हमेशा अपना शौक पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया। सीमा ने आयशा को चित्रकारी प्रतियोगिता में भाग लेने दिया तथा जब आयशा की फोटो समाचार पत्र में छपी तो उन्होंने आयशा को खूब शाबाशी दी। अंत में कह सकते हैं कि सीमा ने अपनी बच्ची की प्रतिभा निखारने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा था।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(ग) सीमा एक बहुत अच्छी माँ थीं। उन्होंने अपनी बच्ची को कभी पिता का आभाव महसूस नहीं होने दिया तथा आयशा की पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ उसके चित्रकारी के शौक को भी पूरा करने में आयशा की पूरी सहायता की। सीमा ने अपनी बच्ची की प्रतिभा निखारने के लिए रंग तथा शीट व अन्य वस्तुएँ भी लाकर दीं। जब आयशा ने प्रतियोगिता के लिए चित्र बनाया तो उसकी माँ सीमा ने वह चित्र कोने में न रखकर उसे आगे प्रतियोगिता में भेजा तथा जब आयशा को प्रथम पुरस्कार मिला तो उन्होंने आयशा की खूब तारीफ़ की। उन्होंने आयशा पर कभी किसी कार्य को करने का दबाव नहीं डाला बल्कि आयशा को अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए प्रेरित किया।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(घ) आयशा और सीमा के संबंधों से संबंधित परिचर्चा विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

(ङ) मैं अपने माता-पिता की घर के कार्यों को करने में मदद करती हूँ। जब भी मेरे विद्यालय में छुट्टी होती है, उस दिन मैं अपने कमरे को साफ़ करती हूँ तथा अपनी चीज़ों को व्यवस्थित करके रखती हूँ। मैं कपड़े धोने में भी अपनी माँ की मदद करती हूँ। जब घर में मेहमान आते हैं तो मैं माँ द्वारा बनाई गई चाय व नाश्ता उनके आगे परोसती हूँ। इस प्रकार घर के छोटे-छोटे कार्य करके मैं अपनी माँ की सहायता करती हूँ।

* विद्यार्थियों को अपने अनुभव स्वयं बताने के लिए प्रेरित करें।

(च) उदाहरण कविता

माँ (कविता)
प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।

चलना हमें सिखाती माँ,
मंज़िल हमें दिखाती माँ।
सबसे मीठा बोल है माँ,
दुनिया में अनमोल है माँ।
खाना हमें खिलाती माँ,
लोरी गाकर सुलाती माँ।
प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।

* विद्यार्थी स्वयं माँ से संबंधित एक स्वरचित कविता अपनी कार्य पुस्तिका में लिखेंगे।

अध्याय-14

स्वर्ग की खोज

अभ्यास: (पेज 88)

मौखिक–

(क) 1. राजा कृष्णदेव राय के अनुसार ब्रह्मांड की सबसे उत्तम और मनमोहक जगह स्वर्ग है।
2. महाराज कृष्णदेव राय तेनालीराम से उनके द्वारा स्वर्ग दिखाने का किया गया वादा निभाने के लिए कहते हैं।
3. तेनालीराम ने महाराज को स्वर्ग का पता बताने का वचन दिया।
4. हमारी पृथ्वी पर खूब हरियाली, चहचहाते पक्षी और वातावरण को शुद्ध करने वाले पेड़-पौधे हैं। हमारी पृथ्वी पर तरह-तरह के जीव-जंतु, नदियाँ, पहाड़ आदि हैं। यानी हमारी पृथ्वी किसी स्वर्ग से कम नहीं है।

लिखित–

1. महाराज कृष्णदेव राय ने बचपन में एक कहानी सुनी थी कि संसार की सबसे उत्तम और मनमोहक जगह स्वर्ग है। वह कहानी याद आने पर राजा के मन में स्वर्ग देखने की इच्छा उत्पन्न होती है।
2. तेनालीराम, महाराज व उनके मंत्रीगणों को एक सुंदर स्थान पर लेकर जाते हैं। वहाँ बहुत हरियाली होती है, पक्षी चहचहा रहे होते हैं व वातावरण को शुद्ध करने के लिए पेड़-पौधे होते हैं।
3. जब तेनालीराम राजा को वचन देते हैं कि वे राजा को स्वर्ग का पता बताएँगे तथा पता न बताने पर राजा द्वारा दिया गया दंड उन्हें मंजूर होगा। तब दरबारी इस बात से खुश होते हैं कि तेनालीराम स्वर्ग नहीं खोज पाएगा और दंड भुगतेगा।
4. तेनालीराम ने दस हज़ार सोने के सिक्कों से उत्तम पौधे और उच्च कोटि के बीज खरीदे थे। जिन्हें वे विजयनगर की ज़मीन में प्रत्यर्पित करेंगे ताकि उनका राज्य भी स्वर्ग की तरह सुंदर बन सके।
5. महाराज कृष्णदेव राय खुश होकर तेनालीराम को ढेरों इनाम देते हैं।

(ख) 1. (अ) स्वर्ग ✓ 2. (स) तेनालीराम ✓ 3. (स) दोनों ✓ 4. (स) दोनों खरीदे ✓

(ग) 1. महाराज कृष्णदेव ने तेनालीराम को सोने के सिक्के और दो माह का समय दिया।
2. महाराज कृष्णदेव राय ने तेनालीराम के आगे शर्त रखी कि अगर दो महीने में स्वर्ग का पता न चला तो तेनालीराम को कड़ा दंड दिया जाएगा।
3. अन्य दरबारी यह सोचकर खुश होते हैं कि तेनालीराम स्वर्ग नहीं खोज पाएगा और सज़ा भुगतेगा।

(घ) 1. महाराज कृष्णदेव राय ने सभी दरबारियों / मंत्रियों से कहा।
2. तेनालीराम ने राजा कृष्णदेव राय से कहा।
3. महाराज कृष्णदेव राय ने तेनालीराम से कहा।

(ङ) 1. अवधि– समय
हमें अपना कार्य पूरा करने के लिए दो माह की अवधि मिली है।
2. प्रमाण– सबूत
स्वर्ग है या नहीं, इसका कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है।
3. इच्छा– अभिलाषा

मेरी इच्छा है कि मैं अपने छोटे भाई के लिए कुछ करूँ।

4. मनमोहक– आकर्षक
   हमारी पृथ्वी पर कई सारी मनमोहक जगहें हैं।
5. विश्वास– भरोसा
   मुझे विश्वास था कि मेरा मित्र मुझे कभी धोखा नहीं देगा।
6. प्रशंसा– तारीफ़
   अपने बेटे की प्रशंसा सुनकर माता-पिता बहुत खुश हुए।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. संसार – दुनिया, जग 2. अवधि – समय, वक्त 3. फूल – सुमन, कुसुम
4. पक्षी – पंछी, खग 5. प्रशंसा – तारीफ़, गुणगान, स्तुति

(ख) 1. थकावट – आवट 2. फैलाव – आव 3. सुशोभित – इत
4. दिखावा – आवा 5. सुंदरता – ता

(ग) 1. ई– मानसी, हँसी, चोरी, लालची 2. आ– झूला, भूला
3. नी– भरनी, करनी, चोरनी 4. वान– दयावान, गाड़ीवान, गुणवान, बलवान
5. ईला– पथरीला, ज़हरीला, खर्चीला

(घ) 1. दिन-रात– मेरे पिताजी दिन-रात मेहनत करते हैं।
2. पढ़ाई-लिखाई– आयशा का मन पढ़ाई-लिखाई में खूब लगता था।
3. लड़ाई-झगड़ा– मेरे पिता लड़ाई-झगड़ा बिलकुल भी नहीं करते।
4. सुख-दुख– सुख-दुख हमारे जीवन में आते-जाते रहते हैं।
5. आना-जाना– इस दुनिया में लोगों का आना-जाना लगा ही रहता है।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(ङ) 1. बरगद के वृक्षों के पत्ते बहुत बड़े होते हैं।
2. विद्यार्थियों ने खेलों का भरपूर लाभ उठाया।
3. बगीचे में पौधे लगे हुए हैं।
4. खिलौना देखकर बच्चे कहकहे लगाने लगे।
5. हमने अपनी पुस्तकें मेज़ों पर रख दीं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण कहानी

(क) रंगीन नाखून

एक दिन राजा कृष्णदेव राय के महल में एक बहेलिया आया। उसने राजा को एक रंग-बिरंगा पक्षी दिखाते हुए कहा कि यह एक विचित्र पक्षी है, जो मोर की तरह नाचता है और तोते की तरह बोलता है। राजा को पक्षी अच्छा लगा तो उन्होंने 50 सोने की मोहरें बहेलिए को देने को कहा। तभी तेनालीराम ने कहा कि महाराज यह बहेलिया झूठ बोल रहा है। यह एक साधारण पक्षी है। महाराज ने तेनालीराम को अपनी बात साबित करने के लिए कहा। तेनालीराम ने पानी का एक गिलास पक्षी पर उड़ेल दिया। पानी पड़ते ही पक्षी पर लगाया रंग उतर गया तथा वह एक साधारण जंगली कबूतर बन गया। राजा ने बहेलिया को दंड देने का आदेश दिया तथा तेनाली से पूछा कि उन्हें कैसे पता चला कि बहेलिया झूठ बोल रहा है। तब तेनाली ने बताया कि बहेलिए के नाखूनों पर लगे रंगों की वजह से तेनालीराम को बहेलिए पर शक हुआ। सभी तेनालीराम की बुद्धिमत्ता की वाह-वाही करने लगे।

* विद्यार्थियों को स्वयं कोई अन्य कहानी लिखने के लिए कहें। यह कहानी उदाहरण के रूप में अध्यापिका बच्चों को सुना सकती हैं।

(ख) 'बुद्धि में बल है' (अनुच्छेद)

मनुष्य को जानवरों से अलग इसलिए कहा जाता है क्योंकि मनुष्य में सोचने-समझने की शक्ति यानी 'बुद्धि' है। हमारे सामने कई ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी बुद्धि से बहुत-सी परेशानियों को हल किया

है। जैसे– तेनालीराम, बीरबल आदि। इसके अतिरिक्त भी कई ऐसे उदाहरण हैं, जब मनुष्य ने अपनी बुद्धि का प्रयोग कर अपनी व अन्य लोगों की जान बचाई है। मनुष्य शारीरिक रूप से बहुत से जानवरों से कमज़ोर है पर अपनी बुद्धि के द्वारा मनुष्य उन पर निमंत्रण कर पाता है जैसे सरकस में हाथियों तथा शेरों से करतब कराना केवल बुद्धि से ही संभव है। बुद्धि कभी भी शक्ति के साथ नहीं आती। यह अध्ययन और अनुभव के साथ ही प्राप्त की जा सकती है।

* विद्यार्थियों को अनुच्छेद स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय–15

पहली बूँद

अभ्यासः (पेज 93)

मौखिक–

(क) 1. बरसात के मौसम में वर्षा होती है।

2. कवि ने बूँद को अमृत इसलिए कहा है क्योंकि वर्षा की बूँदें पड़ते ही सूखी धरती में छोटे-छोटे पौधे उग जाते हैं जिससे चारों ओर हरियाली छा जाती है।
3. आसमान की तुलना सागर से की गई है। आसमान पर छाए बादल ऐसे लग रहे हैं जैसे सागर में लहरें उठती-बैठती हैं।
4. वर्षा ऋतु में बादल आपस में टकराकर बिजली पैदा कर रहे हैं। बिजलियों का शोर ऐसा लग रहा है जैसे बादल वर्षा के आने की खुशी में नगाड़े बजा रहे हों।

लिखित–

1. जब बरसात के मौसम में वर्षा की पहली बूँद धरती पर गिरती है तब धरती पर अंकुर फूट पड़ता है।
2. कविता में हरी दूबों की तुलना धरती रूपी सुंदरी के रोमों की पंक्ति से की गई है। जैसे पानी के पड़ते ही हमारे शरीर के रोम खुल जाते हैं, ठीक उसी तरह वर्षा के आते ही हरी दूब (घास) भी मुसकाने लगती है।
3. सागर आसमान में उड़ता है। वर्षा के आने पर धरती पर परिवर्तन होता है। आसमान में जलरूपी बादलों में बिजली चमक रही है। ऐसा लग रहा है कि सागर बिजलियों के सुनहरे पंख लगाकर आकाश में उड़ रहा हो।
4. कवि ने 'अंबर' की तुलना नील नयनों से तथा 'जलधर' की तुलना उन नीली आँखों की काली पुतली से की है।
5. जिस प्रकार बुढ़ापे में व्यक्ति सुस्त पड़ जाता है और उसमें उत्साह नहीं रहता। ठीक उसी प्रकार गरमी की वजह से धरती भी सूखी पड़ गई है तथा यह बूढ़ी धरती फिर से हरी-भरी होने के लिए ललचा रही है ताकि इसे व इसमें रहने वाले जीव-जंतुओं को नव जीवन प्राप्त हो। तथा सभी की प्यास मिटे।

(ख) 1. (अ) पावस ऋतु ✓ 2. (स) बारिश ✓ 3. (स) गोपाल कृष्ण कौल ✓

(ग) 1. वह पावस का प्रथम दिवस जब,
<u>पहली बूँद धरा पर आई।</u>
<u>अंकुर फूट पड़ा धरती से,</u>
नव जीवन की ले अँगड़ाई।

2. आसमान में उड़ता सागर,
<u>लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर।</u>
बजा नगाड़े जगा रहे हैं,
<u>बादल धरती की तरुणाई।</u>
पहली बूँद धरा पर आई।

(घ) 1. पावस– बरसात 2. वसुंधरा– धरती 3. अधर– होंठ
4. चिर– पुराना 5. पर– पंख

भाषा ज्ञान–

(क) 1. शस्य– श्यामल – शस्य और श्यामल (द्वंद समास)
2. पुलकी– मुस्काई – पुलकी और मुस्काई
3. हरे– सूखे – हरे या सूखे
4. नया– पुराना – नया और पुराना
5. रात– दिन – रात और दिन

(ख) 1. नव– पुरातन 2. अमृत– विष 3. धरा– गगन/अंबर
4. तरुण– वृद्ध 5. प्रथम– अंतिम

(ग) 1. करुण– करूणा 2. बुझना– बुझ 3. मुसकराना– मुसकराहट
4. स्वर्ण– स्वर्णिमा 5. तरुण– तरुणा (जवानी)

(घ)

	विशेष	विशेष्य
1. नीले नयन	नीले	नयन
2. बूढ़ी धरती	बूढ़ी	धरती
3. नव जीवन	नव	जीवन
4. काली पुतली	काली	पुतली
5. हरी दूब	हरी	दूब (घास)

(ङ) 1. आसमान– आकाश, गगन, नभ
2. सागर– समुद्र, जलधि, सिंधु
3. बादल– मेघ, घन, जलद
4. बिजली– दामिनी, विद्युत, धनप्रिया
5. दिवस– दिन, वार, दिवा

रचनात्मक ज्ञान–

(क) गोपालकृष्ण कौल– जीवन परिचय

प्रस्तुत कविता के कवि गोपाल कृष्ण कौल को उनके पिता पंडित नंद किशोर ने शुरुआती संगीत की शिक्षा दी थी। गोपाल कृष्ण कौल ने अपने पिता की मृत्यु के बाद भी संगीत का प्रशिक्षण जारी रखा। ग्वालियर संगीत विद्यालय से भी इनका नाता रहा। वह 1949 में ऑल इंडिया रेडियो में शामिल हुए और बाद में एक कुशल कवि व कलाकार बनें। उन्होंने कई पुस्तकें जैसे गज़ल सप्तक व कथा-सरित्सागर में अपना योगदान दिया।

* विद्यार्थियों गोपाल कृष्ण कौल से संबंधित जानकारी पुस्तकालय से प्राप्त कर लिखेंगे।

(ख) 'वर्षा का वह दिन' (अनुच्छेद)

अगस्त का महीना था बहुत गरमी पड़ रही थी। हवा का नाम भी नहीं था। सभी बेहाल थे। ऐसे में अच. ानक से चारों ओर अँधेरा छा गया और वर्षा होने लगी। बारिश से बचने के लिए सभी इधर-उधर भागने लगे पर मुझे न जाने क्या हुआ? मैं बारिश में भीगकर वर्षा का मज़ा उठाने लगा। मिट्टी की सौंधी-सौंधी खुशबू मुझे बहुत भा रही थी। वर्षा की बूँदें मधुर संगीत उत्पन्न कर रही थीं। जैसे ही वर्षा रूकी बच्चे घर से बाहर निकल आए। वे पानी से भरे गड्ढ़ों में कूदने लगे तथा कागज़ की नाव भी पानी में तैराने लगे। कुछ लोग बरसाती पहनकर और कुछ छाते लगाकर घूम रहे थे। वर्षा होने से सभी व्यक्ति, पशु-पक्षी सभी बहुत प्रसन्न थे।

* विद्यार्थियों को अनुच्छेद स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-16

ओणम्

अभ्यासः (पेज 100)

मौखिक–

(क) 1. ओणम् दक्षिण भारत के केरल प्रदेश का विशेष एवम् मुख्य त्योहार है। यह एक प्रांतीय त्योहार है। बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी इस त्योहार की प्रतीक्षा करते हैं। इस त्योहार के दिनों में संगीत, नृत्य

और क्रीड़ा का आनंदपूर्ण वातावरण चारों ओर छाया रहता है।

2. ओणम् के दिनों में चारों ओर आनंदपूर्ण वातावरण छाया रहता है। इस त्योहार के दिनों में केरल में संगीत, नृत्य और क्रीड़ा आदि के प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं।
3. राजा बलि एक दानवीर राजा थे। एक बार देवराज इंद्र ने भगवान विष्णु से कहा कि वे राजा बलि को उनसे छोटा साबित करने का आग्रह किया। तब विष्णु जी ने बलि से कहा कि वे उन्हें तीन पग ज़मीन दे दें। बलि मान गए तब विष्णु जी ने विराट रूप धरकर स्वर्ग और पाताल लोक को दो पगो में नाप लिया। तीसरा पग रखने के लिए विष्णु जी को जगह न मिली तब बलि ने अपना सिर आगे कर दिया तथा राजा बलि को वरदान दिया कि वह साल में एक बार अपनी प्रजा से मिलने पाताल लोक से धरती पर आ सकते हैं। ऐसी मान्यता है कि ओणम् के दिन राजा बलि अपनी प्रजा से मिलने के लिए आते हैं। इस दिन औरतें घर-आँगन में रंगों और फूलों की रंगोली बनाकर राजा बलि का स्वागत करती हैं।
4. राजा बलि अपनी प्रजा से पिता की तरह प्यार करते थे। उनकी प्रजा भी उन्हें बहुत प्यार करती थी। राजा बलि में बहुत से गुण थे। वे अपनी दानशीलता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे।

लिखित–

1. प्रतिवर्ष श्रावण मास के श्रवण नक्षत्र में जिसे मलयालम में 'ओणम्' कहते हैं महाबलि अपनी प्रजा की दशा देखने के लिए आते हैं।
2. ओणम् के दिन अपने राजा का परंपरागत तरीके से स्वागत करने के लिए लोग अपने घर-आँगन में फूलों से सुंदर आकृतियाँ बनाते हैं, जिन्हें रंगोली कहा जाता है। ओणम् के अवसर पर लोग फूलों से रंगोली बनाते हैं।
3. केरल का लोकप्रिय नृत्य 'कथकली' है। इस नृत्य के समय नृत्यांगनाएँ सुनहरी किनारे वाली दुग्ध-ध वल साड़ियाँ पहनती हैं व केशों को फूलों के गजरों से सजाती हैं।
4. ओणम् के आखिरी दिन हाथियों का जलूस निकाला जाता है। हाथियों को कलात्मक रूप से सजाकर, ढोल-नगाड़े के साथ मुख्य मार्गों तथा स्थानों से जलूस निकाला जाता है। इसमें देवता की सवारी बहुत धूमधाम और ठाठ-बाट से निकाली जाती है।
5. नौका दौड़ में सभी वर्गों के लोग उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। दौड़ में भाग लेने वाली नौकाएँ विष्णु शैय्या जैसी आकार की होती हैं। नावों की लंबाई 15 मीटर होती है। इसमें पचास व्यक्तियों के बैठने की जगह होती है। दौड़ के सयम तीस व्यक्ति ही नौका को खेते हैं। हर नाव पर विभिन्न आकारों व रंगों की पताकाएँ लगी होती हैं। दौड़ के समय नाविकों तथा किनारे पर खड़े लोगों का उत्साह देखने लायक होता है।

(ख) 1. (स) दोनों ✓ 2. (अ) केरल ✓ 3. (ब) विष्णु ✓

(ग) 1. केरल 2. तीसरा 3. महाबलि 4. हाथियों 5. नाविकों 6. केरल

(घ) 1. केरलवासी अपने राजा का परंपरागत– तरीके से स्वागत करते हैं।
2. घर का प्रमुख व्यक्ति– विधिवत उनकी पूजा करता है।
3. नावों की लंबाई लगभग– पंद्रह मीटर होती है।
4. यह एकता का सूत्र पिरोने– वाला त्योहार है।
5. वे अपनी प्रजा को पिता– की तरह प्यार करते थे।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. महाबलि – महान है जो बलि (कर्मधारय समास)
2. परंपरागत – परंपरा के अनुसार (अव्ययी भाव समास)
3. विधिवत् – विधि के अनुसार (अव्ययी भाव समास)
4. विश्वविख्यात – विश्व में विख्यात (तत्पुरुष समास)
5. सहभागी – साथ में भागीदार (अधिकरण तत्पुरुष समास)

(ख) 1. वार्षिक 2. हितैषी 3. स्नेही (प्रजाप्रेमी) 4. वशीभूत 5. शाश्वत्

(ग)

	मूल शब्द		प्रत्यय
1. विसर्जित	विसरजन	+	इत
2. नाविकों	नाविक	+	ओं
3. उत्सुकता	उत्सुक	+	ता
4. प्रसन्नता	प्रसन्न	+	ता
5. परंपरागत	परंपरा	+	गत

(घ) 1. मधुरता 2. लघुता 3. आवश्यकता 4. अधिकता 5. दानी

(ङ) 1. सम्मुख– राघव मेरे सम्मुख बैठा था फिर भी मैं उसे देख नहीं पाया।
2. दहलीज़– लोग अपने घर की दहलीज़ पर रंगोली बना रहे थे।
3. क्रीड़ा– कुछ व्यक्तियों को जल क्रीड़ा में भाग लेना अच्छा लगता है।
4. धार्मिक– मेरी माता जी एक धार्मिक महिला हैं।
5. विश्वविख्यात– ताजमहल एक विश्वविख्यात इमारत है।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) हमारे प्रांत में दीपावली का त्योहार बहुत हर्षो-उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन का हम सब बहुत बेसब्री से इंतजार करते हैं। मेरे घर में दीपावली की तैयारी दशहरे के बाद से ही शुरू हो जाती है। मेरी माँ और मैं घर को सजाने लग जाते हैं तथा रंग-बिरंगे बल्बों से घर को सजाते हैं। हम घर में नया-नया सामान भी लाते हैं। मेरी माँ पूरे परिवार के लिए नए कपड़े भी खरीदती हैं। जिस दिन दीपावली का त्योहार होता है, सुबह-सुबह ही मैं घर की दहलीज़ पर सुंदर-सी रंगोली बनाती हूँ। इसके बाद हम नए कपड़े पहनकर मंदिर जाते हैं तथा शाम के समय लक्ष्मी पूजा करने के बाद पूरे घर में रंग-बिरंगी रोशनी करते हैं और दीयों से पूरे घर को जगमग कर देते हैं। हमारे पड़ोसी पटाखे जलाते हैं परंतु हम प्रदूषण को देखते हुए पटाखे जलाना पसंद नहीं करते इसलिए हम केवल संगीत की धुनों पर ही थिरकते हैं। यह एक ऐसा त्योहार है जिसे हर वर्ग तथा हर जाति के लोग खुशी-खुशी मनाते हैं।
* विद्यार्थी उनके प्रांत में मनाए जाने वाले त्योहार के बारे में स्वयं लिखेंगे।

(ख) * विद्यार्थी वार्तालाप में अपने विचार स्वयं रखेंगे।

अध्याय-17

झाँसी की रानी

अभ्यासः (पेज 108)

मौखिक–

(क) 1. रानी लक्ष्मीबाई वीर और साहसी नारी थीं। उन्हें युद्ध कला में महारथ हासिल थी। नकली युद्ध व्यूह की रचना करना, खूब शिकार खेलना, सेना घेरना, तलवार चलाना और दुर्ग तोड़ना उनके प्रिय खेल थे। लक्ष्मीबाई की इन विशेषताओं को देखकर मराठे बहुत पुलकित होते थे।
2. झाँसी में आकर रानी जल्दी ही विधवा हो गईं। उनके पति गंगाधर राव की मृत्यु हो गई तथा अंग्रेज़ों की नीति थी कि वे निःसंतान राजा की मृत्यु के बाद उस राज्य पर अपना अधिकार कर लेते थे।
3. अंग्रेज़ों ने भारत के कई हिस्सों पर अधिकार कर लिया था। उनमें से प्रमुख हैं– दिल्ली, लखनऊ, बिहार, मद्रास, बंगाल, नागपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंधु, पंजाब आदि।
4. प्रस्तुत कविता में डलहौज़ी, लैफ़्टिनेंट वॉकर, जनरल स्मिथ और ह्यूरोज़ जैसे अंग्रेज़ अफ़सरों के नाम आए हैं।
5. ब्रिटिश राज्य झाँसी को अपने अधिकार में लेने के लिए आया था। वे उन्हें गुलाम बनाना चाहते थे क्योंकि राजा गंगाधर राव का निधन हो गया था और अंग्रेज़ों की नीति थी कि जो राज निः संतान होते हुए मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके राज्य पर अंग्रेज़ अधिकार कर लेते थे।

लिखित–

1. कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत को 'बूढ़ा' इसलिए कहा क्योंकि तब भारत की दशा बहुत

शिथिल और जर्जर हो चुकी थी। भारत लंबे समय से अंग्रेज़ों का गुलाम हो चुका था तथा हर तरफ से कमज़ोर हो रहा था। भारत के पास न धन-धान्य बचा था और समृद्धि पर रानी लक्ष्मीबाई जब अपने राज्य के लिए खड़ी हुईं तो हमारे कमज़ोर हो रहे देश में आज़ादी को हासिल करने की इच्छा जागृत हुई। संपूर्ण भारत में नया जोश उत्पन्न हुआ। सभी लोगों खासकर युवाओं में आशा और उत्साह का नया संचार हुआ। संघर्ष करने की शक्ति आ गई और वे स्वतंत्रता पाने के लिए प्रयास करने लगे।

2. कविता के अनुसार रानी की प्रिय सहेलियाँ काना और मुंदरा थीं।
3. डलहौज़ी गंगाधर राव की मृत्यु पर इसलिए प्रसन्न था क्योंकि निः संतान राजा की मृत्यु होने पर झाँसी का अधिकार स्वतः ही अंग्रेज़ी सरकार को मिल जाना था। उसने फटाफट से सेना की एक टुकड़ी भेजनकर झाँसी के महल पर ब्रिटिश साम्राज्य का झंडा फहरा दिया।
4. युद्ध स्थल पर जब रानी अंग्रेज़ों से लोहा ले रही थी (यानी युद्ध कर रही थी) तब सामने एक नाला आ गया। रानीलक्ष्मीबाई के घोड़े ने आगे बढ़ना रोक दिया। घोड़े के रुकते ही अंग्रेज़ी सैनिकों ने रानी को चारों ओर से घेरकर उनपर वार करने शुरू कर दिए। जिसके कारण रानी वीरगति को प्राप्त हुई।
5. रानी को अंग्रेज़ों ने चारों ओर से घेर लिया था तथा उन पर कई सारे वार किए। उन वारों से रानी बहुत घायल हो गईं थी। समय पर इलाज न होने के कारण बाद में वे स्वर्ग सिधार गईं।

(ख) 1. (स) 1857 ✔ 2. (ब) भवानी ✔ 3. (अ) दिल्ली ✔
4. (स) दोनों ✔ 5. (अ) 23 ✔ 6. (ब) राजा गंगाधर राव ✔

(ग) 1. कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी, लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी, नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी, बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
2. उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई, किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई, तीर चलाने वाले कर में, उसे चूड़ियाँ कब भाईं! रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
3. इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई, मर्द बनी मैदानों में, लैफ़्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में, रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वद्ंव आसमान में।

(घ) 1. प्रस्तुत पंक्तियाँ कवयित्री सुभद्र कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री रानीलक्ष्म. ीबाई के साहस, पराक्रम और बलिदान का वर्णन करते हुए कहा गया है कि किस तरह रानी ने गुलाम भारत को स्वतंत्र करवाने के लिए हर भारतीय के मन में चिंगारी लगा दी थी। रानी लक्ष्मीबाई के साहस से हर भारतवासी जोश से भर उठा और सबने मन में अंग्रेज़ों को दूर भगाने की ठान ली। 1857 में उन्होंने जो तलवार उठाई थी यानी अंग्रेज़ों के विरुद्ध जंग छेड़ी थी तथा सबने अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालने की ठान ली थी।
2. प्रस्तुत पंक्तियों में कहा गया है कि जब राजा गंगाधर राव जी का देहांत हो गया तब सबसे अधिक डलहौज़ी प्रसन्न हुआ था। उसने झाँसी का राज्य हड़पने का यह अच्छा अवसर पाया था। उसने तुरंत अपनी सेना भेज झाँसी के किले पर अपना झंडा फहरा दिया। इस प्रकार उस वारिस रहित झाँसी के राज्य का वारिस ब्रिटिश राज्य बन गया।
3. जब लक्ष्मीबाई को चारों ओर से अंग्रेज़ों ने घेर लिया। उन्होंने उस पर वार पर वार किए जिसके कारण शेरनी-सी रानी घायल होकर गिर गई और वीरगति को प्राप्त हुईं। कवयित्री कहती हैं कि हमनें बुंदेले हरबोलों के मुँह से सुना है कि रानी लक्ष्मीबाई वीर पुरुषों की भाँति बहादुरी से लड़ी थीं।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. मर्दानी – आनी 2. गाथाएँ – एँ 3. जवानी – ई
4. पुरानी – आनी 5. सिंहनी – नी
6. स्वतंत्रता – ता 7. ज़ुबानी – ई 8. बहुतेरे – एरे

(ख) 1. वीरता – कायरता 2. युद्ध – शांति 3. हार – जीत
4. मनुज – दनुज (राक्षस) 5. सौभाग्य – दुर्भाग्य
6. स्वर्ग – नरक 7. विधवा – सुहागन 8. जवानी – बुढ़ापा

(ग) 1. राजा – बादशाह, नृप, महाराज 2. दुर्गा – भवानी, चंडिका, कालिका

3. कहानी – कथा, गाथा, किस्सा 4. वैभव – संपदा, ऐश्वर्या, धन-दौलत
5. आज़ादी – स्वतंत्र, स्वाधीनता, मुक्ति

(घ) 1. दुस्तर – दुः + तर 2. निः संतान – निः + संतान 3. विषम – वि + सम
4. निष्प्राण – निः + प्राण 5. दुस्साहस – दुः + साहस

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण विचार

(क) रानी लक्ष्मीबाई का जन्म एक मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी। कानपुर के नाना की वह मुँहबोली बहन थी। लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मणिकर्णिका था परंतु परिवार वाले उन्हें प्यार से 'मनु' कहकर पुकारते थे। उन्हें बचपन से ही हथियार चलाने, ढाल, कृपाण, कटारी चलाने और युद्ध करने का शौक था। इन्हें बचपन मे 'छबीली' के नाम से भी बुलाया जाता था। इन्हें शिवाजी की गाथाएँ मुँह ज़ुबानी याद थीं। माँ भवानी उनके कुल की देवी थीं। झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ रानी लक्ष्मीबाई की शादी हुई थी परंतु कुछ समय बाद ही राजा का देहांत हो गया तब डलहौज़ी ने झाँसी के महल पर ब्रिटिश साम्राज्य का झंडा फहरा दिया। इसके बाद रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेज़ों के घमासान युद्ध हुआ। रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ों के साथ लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हो गई पर वीरगति को प्राप्त होने से पहले उन्होंने सबके मन में आज़ादी को प्राप्त करने की ललक पैदा कर दी। इस तरह लक्ष्मीबाई का नाम इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गया।

* विद्यार्थी स्वयं जीवन परिचय लिखेंगे।

(ख) * विद्यार्थी स्वयं वीर नारियों के चित्र अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाएँगे।
1. रानी अवन्तीबाई लोधी 2. रानी लक्ष्मीबाई 3. रानी चेनम्मा 4. बेगम हज़रत महल
5. रानी दुर्गावती 6. रानी द्रौपदीबाई 7. वीरांगना झलकारी देवी

अध्याय-18

यक्ष-प्रश्न

अभ्यासः (पेज 115)

मौखिक–

(क) 1. ब्राह्मण ने अपने रोने का कारण पांडवों को बताया ताकि वे हिरन को पकड़कर उसके सींग में अटकी अरणी की लकड़ी ब्राह्मण को लाकर दे दें।
2. हिरन के पीछे पाँचों पांडव उसे पकड़ने के लिए दौड़े थे।
3. तीसरी बार सरोवर का पानी पीने अर्जुन गए थे। अपने भाइयों को मृत देखकर अर्जुन ने भी शब्द-भेदी बाण चलाए पर उसका कोई फल उन्हें नहीं मिला। अर्जुन ने भी थककर जलाश्य का पानी पिया और जैसे ही वे किनारे पर पहुँचे। वे बेहोश हो गिर गए।
4. धैर्य ही मनुष्य का साथ देता है।
5. अहम् भाव यानी अहंकार के कारण उत्पन्न हुए घमंड को त्यागकर मनुष्य प्रिय बन जाता है।

लिखित–

1. जब हिरन अरणी की लकड़ी से अपना शरीर खुजा रहा था तब लकड़ी उसके सींग में ही अटक गई। इससे हिरन घबरा उठा और बहुत तेज़ी से भाग खड़ा हुआ।
2. पांडव इस से लज्जित थे कि वे ब्राह्मण का साधारण-सा काम (हिरन पकड़ने का) भी न कर पाए थे।
3. सबसे पहले पानी की तलाश में नकुल गया था। उसे स्वच्छ पानी का सरोवर मिला। जैसे ही नकुल सरोवर में पानी पीने उतरा तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी। जिसमें नकुल को कुछ प्रश्नों के उत्तर देने को कहा गया पर नकुल ने आवाज़ की परवाह किए बिना पानी पी लिया। पानी पीते ही नकुल बेहोश होकर गिर गया।
4. चौथी बार भीम अपने भाइयों की तलाश में सरोवर के पास गए। उन्होंने भी प्रश्नों के उत्तर दिए बिना पानी पीने का साहस किया तथा वे भी पानी पीते ही वहीं ढेर हो गए।

5. युधिष्ठिर को सरोवर पर अपने चारों भाई मृत दिखाई दिए।
6. हवा से तेज़ मन चलता है।
7. क्रोध के खो जाने से मनुष्य को दुख नहीं होता।
8. यक्ष ने युधिष्ठिर को पक्षपात से रहित इसलिए कहा क्योंकि जब यक्ष ने कहा कि वे अपने किसी एक भाई को जीवित कर सकते हैं तो युधिष्ठिर ने कहा कि 'मेरे पिता की दो पत्नियाँ थीं। कुंती का पुत्र, मैं बचा हूँ तथा चाहता हूँ कि माँ माद्री का भी एक पुत्र जीवित रहे।' यह सुनकर यक्ष बहुत प्रसन्न हुए तथा उन्होंने सभी को जीवित कर दिया।

(ख) 1. (अ) युधिष्ठिर ✓ 2. (स) अरणी की ✓ 3. (स) दोनों ✓ 4. (ब) युधिष्ठिर ✓

(ग) 1. बारह 2. अटक 3. नकुल 4. अर्जुन 5. जलाश्य
6. माद्री

(घ) 1. धर्म से विमुख होने पर – मनुष्य का नाश होता है।
2. प्यास के मारे उन सभी – का कंठ सूख रहा था।
3. कुछ दूर जाने पर उन्हें – एक सरोवर मिला।
4. उस ब्राह्मण पर तरस खाकर – पाँचों भाई हिरन के पीछे दौड़े।
5. उन्होंने भाइयों की खोज – के लिए भीम को भेजा।

भाषा ज्ञान

(क) 1. हिरन तेज़ी से भाग खड़ा हुआ।
2. हिरन लकड़ी से अपना शरीर खुजलाने लगा और चल पड़ा।

(ख) 1. निर्जन– निः + जन (विसर्ग संधि) 2. सर्वोत्तम– सर्व + उत्तम (गुण संधि)
3. संसार– सम् + सार (व्यंजन संधि) 4. अत्याचार– अति + आचार (यण संधि)
5. दुस्साहस– दुः + साहस (विसर्ग संधि)

(ग) 1. पांडव 2. लकड़ियाँ 3. सींगों 4. प्रश्न 5. तालाबों

(घ) 1. आते-आते– मुझे घर आते-आते समय लगेगा।
2. रण-कुशलता– रानी लक्ष्मीबाई की रण-कुशलता देखकर अंग्रेज़ों ने दाँतों तले उँगली दबा ली थी।
3. ठीक-ठीक– मेरी माँ ने सब्ज़ीवाले भैया से सब्ज़ियों के ठीक-ठीक दाम लगाने के लिए कहा।
4. धीरे-धीरे– कक्षा में कुछ बच्चे धीरे-धीरे बातचीत कर रहे थे।
5. विचार-विमर्श– मेरे पिताजी परिवार से संबंधित हर निर्णय को लेने से पहले मेरी माँ से विचार-विमर्श अवश्य करते हैं।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) महाभारत का युद्ध (संक्षिप्त टिप्पणी)

उदाहरण टिप्पणी

'महाभारत' भारत का एक प्रमुख ग्रंथ है, जो स्मृति के इतिहास वर्ग में आता है। महाभारत के मुख्य पात्र हैं– पांडव (पाँच भाई)– युधिष्ठिकर, भीम, अर्जुन, सहदेव और नकुल। ये सभी कुंती और माद्री के पुत्र थे। वहीं कौरव 100 भाई थे जो कि गंधारी और धृतराष्ट्र के पुत्र थे। महाभारत का युद्ध पांडवों और कौरवों के बीच में हुआ था। इसमें श्री कृष्ण ने पांडवों का साथ दिया था और सूर्यपुत्र कर्ण ने कौरवों का पक्ष लिया था। यह युद्ध कुरुक्षेत्र के आस पास हुआ था। यह युद्ध 18 दिनों तक चला था। इस युद्ध में लाखों लोग लड़े थे परंतु अंत में केवल 12 योद्धा ही जीवित बचे थे। इस युद्ध में पांडवों की जीत हुई थी। यह दो पक्षों के बीच सत्ता के संघर्ष को लेकर लड़ी गई भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी लड़ाई माना गया है। इस युद्ध को धर्मयुद्ध कहा गया है क्योंकि सत्य और न्याय के लिए इसे लड़ा गया था।

* विद्यार्थी महाभारत के युद्ध से संबंधित जानकारी एकत्रित कर हटा दें। अनुच्छेद स्वयं लिखेंगे।

(ख) 'पांडव' राजा पांडु और उनकी दो पत्नियों के पुत्र थे।
कुंती – (युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन) माद्री – (नकुल और सहदेव)

ये पाँच भाई थे इसलिए ये पांडव कहलाए गए।
युधिष्ठिर – धर्मात्मा एवं सत्यवादी थे।
भीम – अपनी शक्ति तथा भूख के लिए जाने जाते थे।
अर्जुन – धर्नुधर के रूप में प्रसिद्ध थे।
नकुल – निपुण घुड़सवार थे।
सहदेव – निपुण तलवार भांजक थे।
मुख्य बातें
1. पांडव जुए के खेल में अपना सबकुछ हार बैठे थे।
2. पांडवों को बारह वर्षों का वनवास भोगना पड़ा।
3. पांडवों और कौरवों के बीच महाभारत का युद्ध हुआ।
4. इसमें पांडवों की मदद श्री कृष्ण ने की थी।
5. महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत हुई।

* विद्यार्थी स्वयं पांडवों से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे तथा कक्षा में बताएँगे।

अध्याय-19

मिसाइल मैन–अब्दुल कलाम

अभ्यासः (पेज 120)

मौखिक–

(क) 1. डॉ. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम् कस्बे में हुआ था।
2. डॉ. अब्दुल कलाम को 'मिसाइल मैन' या 'अग्नि पुरुष' के नाम से भी संबोधित किया जाता है।
3. डॉ. अब्दुल कलाम को गीता और कुरान दोनों पुस्तकें समान रूप से प्रिय थीं।
4. अंग्रेज़ी भाषा पर डॉ. अब्दुल कलाम का अच्छा अधिकार था।

लिखित–

1. डॉ. कलाम को 'पद्मभूषण', 'पद्मविभूषण' और 'भारत-रत्न' की उपाधि से अलंकृ किया गया है।
2. डॉ. कलाम का स्वप्न था कि देश में विज्ञान की शक्ति को विकसित करके, 2020 तक भारत को विश्व का अग्रणी राष्ट्र बनाया जाए।
3. 'अग्नि' के सफल परीक्षण के बाद डॉ. कलाम आर.सी.आई. हैदराबाद में दस लाख वृक्षों का सुंदर उपवन बनाना चाहते थे। जहाँ शांति हो तथा पक्षी और जीव जंतु विचरण कर सकें।
4. डॉ. कलाम के जीवन से हमें यह संदेश मिलता है कि साधारण लोग भी कठिन परिश्रम और लगन से महान बन सकते हैं।
5. डॉ. कलाम एक सच्चे इंसान थे। वे राजनीतिज्ञ न होते हुए भी राष्ट्रपति बने। उनके संरक्षण में भारत को एक नई दिशा मिली और देश की गरीबी, बेरोज़गारी, अशिक्षा से जूझने के लिए भी हमें शक्ति मिली। उदार हृदय, तपस्वी, धरती से जुड़े सादगी पसंद डॉ. कलाम हम भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत थे।

(ख) 1. (अ) 15 अक्तूबर, 1931 ✓ 2. (स) दोनों ✓ 3. (ब) शाकाहारी ✓
4. (अ) 2020 तक ✓ 6. (अ) बच्चों ✓

(ग) 1. जेन्युलअबदीन 2. शाकाहारी, भगवद्गीता 3. अंग्रेज़ी
4. मिसाइल मैन, अग्नि पुरुष 5. महान

भाषा ज्ञान

(क) 1. उसका 2. वह 3. उसकी
4. उसके 5. वह, अपनी 6. हम, तुम, हमारे

(ख) 1. सच्चे – तपस्वी 2. अग्रणी – राष्ट्र 3. सर्वोच्च – पद
4. महान – वैज्ञानिक 5. सच्चे और सरल – इनसान

(ग)

	प्रत्यय		मूल शब्द
1. पारदर्शी –	दर्शी	+	पार
2. ईमानदारी –	दारी	+	ईमान
3. राष्ट्रवादी –	वादी	+	राष्ट्र
4. अच्छाई –	ई	+	अच्छा
5. दयालुता –	ता	+	दयालु

(घ) 1. पारदर्शी – सुरक्षा कारणों से ताजमहल में केवल पारदर्शी बोतलों में ही पानी ले जाने की अनुमति है।
2. तकलीफ़ – माँ अपने बच्चे को कभी तकलीफ़ में नहीं देख पाती है।
3. जीवंत – उन्होंने कहानी को इतने प्रभावी तरीके से पढ़ा कि मुझे लगा जैसे कहानी के सभी पात्र जीवंत हो गए हों।
4. परीक्षण – वायु सेना ने यानों की उड़ान-क्षमता का परीक्षण किया।
5. संवेदनशील – मैं संवेदनशील मुद्दों पर बातचीत नहीं करना चाहता हूँ।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

भारत रत्न भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। यह सम्मान राष्ट्रीय सेवा के लिए दिया जाता है। इन सेवाओं में कला, साहित्य, विज्ञान, सार्वजनिक सेवा और खेल शामिल हैं।

1. देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को साल 1954 में देश के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया गया था। वे एक बेहतरीन शिक्षक थे।
2. डॉ. जाकिर हुसैन को साल 1963 में देश का सबसे बड़ा सम्मान मिला। वे अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति थे।

* विद्यार्थी स्वयं भारत रत्न पाने वाले राष्ट्रपतियों के नाम तथा उनके कार्य के बारे में जानकारी एकत्रित कर लिखेंगे।

(ख) डॉ. अब्दुल कलाम भारत के एक मिसाइलमैन थे। वो लोगों में 'जनता के राष्ट्रपति' के रूप में प्रसिद्ध थे। वे एक महान वैज्ञानिक और भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। इनका जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में तमिलनाडु में हुआ था। इन्होंने साल 1954 में तिरुचिरापल्ली सेंट जोसेफ़ कॉलेज से अपनी ग्रेजुएशन और साल 1960 में चेन्नई में इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की थी। कलाम जी ने एक वैज्ञानिक के तौर पर डी.आर.डी.ओ में कार्य किया था। जहाँ इन्होंने सेना के लिए छोटा हेलिकॉप्टर डिज़ाइन किया था। भारत में बैलिस्टिक मिसाइल के विकास के लिए किए गए अपने महान योगदान के कारण उन्हें 'मिसाइल मैन' कहा गया। 1998 में उन्होंने पोखरन-द्वितीय परमाणु परीक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ये भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे जिन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। भारत में एक वैज्ञानिक सलाहाकार के रूप में साथ ही साथ इसरो और डी.आर.डी.ओ में अपने योगदान के लिए इन्हें पदम् भूषण और पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया। इन्होंने कई प्रसिद्ध किताबें लिखी थीं जैसे विंग्स ऑफ फायर, इंडिया 2020 माई जर्नी आदि।

* विद्यार्थी स्वयं पाठ व अध्यापिका से प्राप्त जानकारी के आधार पर डॉ. अब्दुल कलाम के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी कार्य पुस्तिका में लिखेंगे।

अध्याय-20

कुंडलियाँ

अभ्यासः (पेज 124)

मौखिक–

(क) 1. दौलत पाकर हमें सपने में भी अभिमान नहीं करना चाहिए।
2. कवि ने बहते जल को चंचल कहा है क्योंकि वह कभी एक जगह स्थिर होकर नहीं ठहरता।
3. कवि गिरिधर जी के अनुसार यह धन-दौलत कभी भी एक जगह नहीं टिकती। यह एक जगह से

दूसरी जगह यानी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के पास चली जाती है।

4. कवि ने मधुर वचन बोलने के लिए कहे हैं।
5. गिरिधर जी ने जीते-जी संसार में यश लेने के लिए कहा है जो कि हमें हमारे अच्छे व्यवहार, अच्छे कार्य, सबसे प्रेम करने और मधुर वचन बोलने से ही मिल सकता है।

लिखित–

1. कवि ने कहा है कि जिस तरह बहता हुआ जल चंचल होता है। वह कभी एक जगह स्थिर होकर नहीं ठहरता, उसी तरह आने वाला धन भी चंचल होता है, वह भी किसी एक व्यक्ति के पास हमेशा के लिए नहीं ठहरता।
2. जिस प्रकार मेहमान कुछ दिनों के लिए घर आते हैं, फिर चले जाते हैं। इसी तरह यह धन-दौलत भी आनी-जानी है। यह हमेशा के लिए हमारे पास नहीं रहती।
3. जो व्यक्ति कोई भी काम बिना विचार किए करता है, वो अपना काम बिगाड़ लेता है और लोग उसका मज़ाक उड़ाते हैं।
4. यदि हम जीवन में सोच-विचार करके कार्य करेंगे तो हमें बाद में पछताना नहीं पड़ेगा इसलिए जीवन में हर काम सोच-समझकर करें ताकि मन शांति रहे।
5. बिना सोच-विचार किए काम करने वाले लोग हर जगह हँसी के पात्र बन जाते हैं। जिसके कारण उनका मन अशांत रहता है तथा उन्हें संसार की चीज़ें जैसे खाना-पीना, हँसी-खुशी और सम्मान कुछ अच्छा नहीं लगता।

(ख) 1. (स) संसार में ✓ 2. (स) स्थिरता ✓
3. (अ) खाना-पीना ✓, (ब) मान-सम्मान ✓, (स) हँसी-खुशी ✓ (सभी विकल्प सही हैं)
4. (ब) उसका दुख ✓ 5. (अ) मन में ✓

भाषा ज्ञान

(क) 1. मीठे – खट्टा / कड़वा 2. बिगाड़ना – सँवारना (बनाना)
3. सम्मान – अपमान 4. चंचल – गंभीर 5. यश – अपयश

(ख) 1. कुछ 2. पीछे (बाद में) 3. जैसे 4. बिगाड़े 5. ठिकाना

(ग) 1. (अ) आदर 2. (स) संसार 3. (अ) वारि 4. (ब) वादा 5. (ब) घमंड

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण कुंडलियाँ

'काका हाथरसी' द्वारा रचित कुंडलियाँ

1. पत्रकार दादा बने, देखो उनके ठाठ।
   कागज़ का कोटा झपट, करें, एक के आठ।।
   करें एक के आठ, चल रही आपाधापी।
   दस हज़ार बताएँ, छपें ढाई सौ कॉपी।।
   विज्ञापन दे दो तो, जय-जयकार कराएँ।
   मना करो तो उल्टी-सीधी न्यूज़ छपाएँ।।
2. कुत्ता बैठा कार में, मानव माँगे भीख।
   मिस्टर दुर्जन दे रहे, सज्जनमल को सीख।।
   सज्जनमल को सीख, दिल्लगी अच्छी खासी।
   बगुला के बंगले पर, हंसराज चपरासी।।
   हिंदी को प्रोत्साहन दें, किसका बलबुत्ता।
   भौंक रहा इंगलिश्या में, मंत्री जी का कुत्ता।।
3. प्रोफ़ेसर या प्रिंसिपल, बोलें जब प्रतिकूल।
   लाठी लेकर तोड़ दो, मेज़ और स्टूल।।
   मेज़ और स्टूल, चलाओ ऐसी हॉकी।
   शीशा और किवाड़, बचे नहिं एकहू बाकी।।

कह 'काका' कविराम, भयकर तुमको देता।
बन सकते हो इसी तरह, 'बिगड़े दिल' नेता।।

* विद्यार्थियों को पुस्तकालय में से 'काका हाथरसी' द्वारा रचित कविता ढूँढ़कर स्वयं पढ़ने के लिए कहें।

(ख) * विद्यार्थी पाठ में लिखी कुंडलियों को पढ़ें तथा प्रश्न में बताई गईं विशेषताओं पर स्वयं गौर करेंगे।

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com